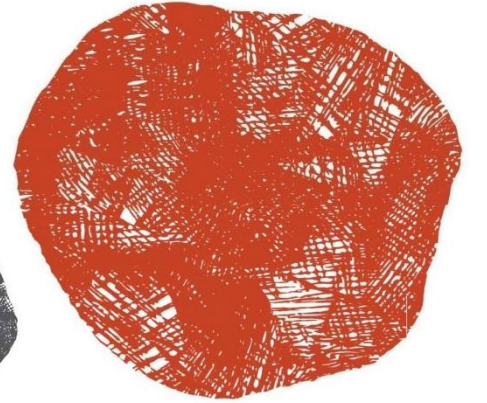
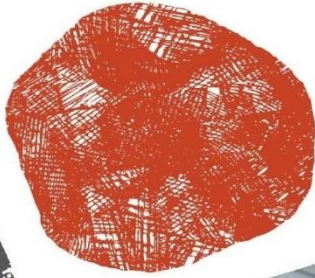




विद्यालय नेतृत्व

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण :
विद्यालय में समावेशन को प्रोत्साहन



भारत में विद्यालय समर्थित
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in



<http://creativecommons.org/licenses/>



एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव



अ.शा.पत्र क्र. R.S.K./10.....
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक. 20-1-2016...

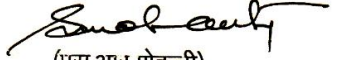
संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आनंददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया है। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रुचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,


(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी

आयुक्त

राज्य शिक्षा केन्द्र एवं

सचिव

मध्यप्रदेश शासन

स्कूल शिक्षा विभाग



अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8

दिनांक : 12-1-16

पुस्तक भवन, वी-विंग

अरेरा हिल्स, भोपाल-462011

फोन : (का.) 2768392

फैक्स : (0755) 2552363

वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in

ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

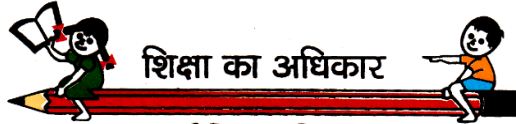
प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रुचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हें प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा है, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे। शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)



शिक्षा का अधिकार

**सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें**

टेस-इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार, कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा, डायरेक्टर, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाडा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर.सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सेना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरुण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

यह विद्यालय नेतृत्व ओईआर (ओपन एजुकेशनल रिसोर्स) **TESS-India** द्वारा विद्यालय प्रमुखों को उनकी समझ और कौशलों को बहतर बनाने के लिए परिकल्पित **20** इकाइयों के समुच्चय में से एक है ताकि वे अपने विद्यालय में अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया का नेतृत्व कर सकें।

ये इकाइयाँ स्टाफ, छात्रों और अन्य लोगों द्वारा विद्यालय में किए जाने के लिए हैं तथा आवश्यक रूप से अभ्यास आधारित हैं। जो प्रभावी विद्यालयों के शोध एवं शैक्षणिक अध्ययन पर आधारित हैं।

इन इकाइयों के अध्ययन के लिए कोई अनुशासित क्रम नहीं है, लेकिन विद्यालय प्रमुख सक्षमकर्ता के रूप में शुरू करने के लिए सर्वोत्तम स्थान रखता है, क्योंकि यह संपूर्ण समुच्चय के लिए दिशा प्रदान करता है। आप विशिष्ट थीमों से संबंधित संयोजनों में इकाइयों का अध्ययन करने का चुनाव कर सकते हैं; ये इकाइयाँ नेशनल कॉलेज ऑफ लीडरशिप करिकुलम फ्रेमवर्क (भारत) के मुख्य क्षेत्रों के साथ संरेखित किए गए हैं: जिनके प्रमुख क्षेत्र 'विद्यालयी नेतृत्व पर दृश्य', 'स्वयं का प्रबंधन और विकास करना'; 'शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण करना'; 'भागीदारियों का नेतृत्व करना', नवप्रवर्तन एवं नेतृत्व पर उन्मुखीकरण आदि।

कुछ इकाइयाँ एक से अधिक मुख्य क्षेत्र को संबोधित करती हैं।

इन इकाइयों का उपयोग विद्यालय प्रमुखों द्वारा स्व-अध्ययन के लिए या पढ़ाए गए नेतृत्व कार्यक्रम के भाग के रूप में किया जा सकता है। दोनों ही परिप्रेक्ष्यों में, व्यक्तिगत सीखने की डायरी रखने में और गतिविधियों और केस स्टडी की चर्चा के माध्यम से अनुभव साझा करने में उपयोगी हैं। शब्द 'विद्यालय प्रमुख' का उपयोग इन इकाइयों में मुख्याध्यापक, प्रधानाध्यापक, प्रिंसिपल, सहायक अध्यापक या विद्यालय में नेतृत्व का दायित्व लेने वाले किसी भी व्यक्ति के संदर्भ में किया जाता है।

वीडियो संसाधन



आइकन संकेत देता है कि वे **TESS-India** विद्यालय नेतृत्व वीडियो संसाधन कहाँ हैं, जिनमें विद्यालय प्रमुख बतलाते हैं कि वे अपने विद्यालय में शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए परिवर्तन कैसे ला रहे हैं। हमें उम्मीद है कि वे आपको इसी तरह के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। इन्हें पाठ-आधारित इकाइयों के माध्यम से आपके कार्य अनुभव को परिपूर्ण एवं समृद्ध करने के लिए रखा गया है, यदि आप उनका उपयोग करने में असमर्थ रहते हैं, तो भी यह इकाइयाँ उपयोगी एवं लाभकारी हैं। **TESS-India** के वीडियो संसाधनों को **TESS-India** की वेबसाइट (<http://www.tess-india.edu.in/>) पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। विकल्प के तौर पर, आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी उपयोग कर सकते हैं।

TESS-India विद्यालय समर्थित शिक्षक-शिक्षा परियोजना के बारे में :-

TESS-India का उद्देश्य है छात्र-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोण के विकास में विद्यालय प्रमुखों एवं शिक्षकों की सहायता के लिए मुक्त शिक्षा संसाधनों (**OERs**) के प्रावधानों के माध्यम से भारत में प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षकों की कक्षा अभ्यासों में सुधार लाना। **105 TESS-India** विषय **OERs** शिक्षकों को भाषा, विज्ञान और गणित के विषयों में विद्यालय की पाठ्यपुस्तक के लिए एक पूरक पुस्तिका प्रदान करते हैं। वे शिक्षकों के लिए अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग करने के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं, जिनमें यह दर्शाने वाले केस स्टडी भी शामिल रहती हैं कि अन्य शिक्षकों द्वारा उस विषय को कैसे पढ़ाया गया, अपनी पाठ योजनाएँ तैयार करने के लिए तथा विषय संबंधी ज्ञान के विकास में सहायक संसाधन भी शामिल हैं।

TESS-India OERs को भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किया गया है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध हैं (<http://www.tess-india.edu.in/>)। **OER** भाग लेने वाले प्रत्येक भारतीय राज्य के लिए उपयुक्त, कई संस्करणों में उपलब्ध हैं, उपयोगकर्ताओं को इन्हें अपनाने, अपनी स्थानीय जरूरतों व संदर्भों की पूर्ति के लिए उनका अनुकूलन एवं स्थानीयकरण करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

संस्करण 2.0 SL13v1

Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/>

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है?

पिछले दो या तीन दशकों में, भारत सहित दुनिया भर की सरकारों ने — शिक्षा के सभी क्षेत्रों में लिंग संबंधी और सामाजिक पक्षपातों को संबोधित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा की है। इस अवधि में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में और उसे शिक्षकों द्वारा कैसे प्रदान किया जा सकता है उसमें आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। बदलते रुझानों को निम्न प्रकार से संक्षेप में सारांशित किया जा सकता है:

- असमताओं को दूर करने पर अधिक जोर
- सभी के लिए न्यायोचित शिक्षा
- बच्चे पर केंद्रित, जरूरत पर आधारित शिक्षा
- अधिगम-प्रक्रिया में हर बच्चे की प्रतिभागिता को अधिकाधिक करना।

ये रुझान प्रमुख भारतीय नीति दस्तावेजों में प्रतिबिंबित हैं, जिनमें शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एनपीई, 1986), द नेशनल करिकुलम फॉर एलीमेंटरी एंड सेकंडरी एजुकेशन (1988), और द रिवाइज्ड एनपीई एंड प्रोग्राम फॉर एक्शन (1992) इत्यादि शामिल हैं।

अभी हाल ही में, 2005 के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) ने एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसमें सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा प्रदान करने के तरीके शामिल किए गए हैं। वह शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित कामों को करने की जरूरत को स्पष्ट करती है:

- हर बच्चे की अनोखी जरूरतों के प्रति संवेदनशील होना
- बच्चे पर केंद्रित, सामाजिक रूप से प्रासंगिक और न्यायोचित पढ़ाने/अधिगम-प्रक्रिया प्रदान करना
- उनके सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों में विविधता को समझना।

आज कोई भी शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा अपने साथ विद्यालयों लाई जा रही असंख्य माँगों और अपेक्षाओं की समझ या उनके प्रति संवेदी हुए बिना व्यावसायिक रूप से सफल नहीं हो सकता है। उन्हें, वर्ग, जाति, धर्म, लिंग और निःशक्तता पर ध्यान दिए बिना सभी विद्यार्थियों का समावेश करने और सीखने के सार्थक अवसर प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षा का अधिकार कानून (RTE), 2009 लिंग और सामाजिक श्रेणी पर ध्यान दिए बिना सभी विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के इस निर्णय को अधिक मजबूत और सुदृढ़ करता है, जिसके लिए उसमें शारीरिक और सीखने के परिवेश, पाठ्यचर्या, और अध्यापन प्रथाओं से संबंधित विस्तृत स्वीकार योग्य नियम निर्धारित किए गए हैं।

उल्लेखनीय परिमाण में शोध द्वारा पुष्टि की गई है कि शिक्षकों के कौशल, रवैये और प्रोत्साहन सुविधाहीन और अधिकारहीन समुदायों के बच्चों की समावेशी, प्रतिभागिता और उपलब्धि उल्लेखनीय ढंग से बढ़ा सकते हैं समावेशी विद्यालय कक्षा में शिक्षकों द्वारा न्यायोचित शिक्षा प्रदान करने में विद्यालय नेता की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण होती है। सबसे पहले, यह आवश्यक है कि विद्यालय प्रमुख:

- को विश्वास हो कि नतीजे न्यायोचित हो सकते हैं, उनके विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रारंभिक बिंदु चाहे कुछ भी हों
- स्टाफ और विद्यार्थियों को सभी विद्यार्थियों की उपलब्धि को ऊपर उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है
- छात्रों की सफलता को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि से अधिक आधार पर मापता है।

एक विद्यालय प्रमुख के रूप में, आपको बच्चे के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर (1989) से अवगत होना चाहिए जो हर एक सदस्य देश को अपने सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का आदेश देकर विविधता को अपनाने की उल्लेखनीय प्रेरणा देता है। विद्यालय प्रमुख के रूप में अपने विद्यालय के समुदाय में समावेशी रवैयों और बर्तावों का नेतृत्व करना, उन्हें प्रोत्साहित करना और विकसित करना आपकी जिम्मेदारी है।



चित्र 1 विद्यालय में समावेशन को प्रोत्साहन।

अधिगम-डायरी

इस इकाई में काम करते समय आपसे अपनी अधिगम-डायरी में नोट्स बनाने को कहा जाएगा। यह डायरी एक किताब या फोल्डर है जहाँ आप अपने विचारों और योजनाओं को एकत्र करके रखते हैं। संभवतः आपने अपनी डायरी शुरू कर भी ली है।

इस इकाई में आप अकेले काम कर सकते हैं, लेकिन यदि आप अपने अधिगम की चर्चा किसी अन्य विद्यालय नेता के साथ कर सकें तो आप और भी अधिक सीखेंगे। यह आपका कोई सहकर्मी, जिसके साथ आप पहले से सहयोग करते आए हैं, या कोई व्यक्ति हो सकता है जिसके साथ आप नए संबंध का निर्माण कर सकते हैं। इसे नियोजित ढंग से या अधिक अनौपचारिक आधार पर किया जा सकता है। आपकी अधिगम-डायरी में बनाए गए आपके नोट्स इस प्रकार की बैठकों के लिए उपयोगी होंगे, और साथ ही आपकी दीर्घावधि की शिक्षण-प्रक्रिया और विकास का चित्रण भी करेंगे।

इस इकाई से विद्यालय प्रमुख क्या सीख सकते हैं

- अपने स्टाफ के साथ विविधता, समानता और समावेशन की साझा समझ विकसित करना।
- अपने सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम-परिणामों के लिए कार्यवाहियों को प्राथमिकता देना।
- अपने विद्यालय में सुविधाहीनता या बहिष्करण को संबोधित करने वाली कार्यवाहियों की योजना बनाना और उसे निष्पादित करने के लिए अन्य लोगों के साथ सहयोग करना।
- आपके हस्तक्षेपों के प्रभाव का मूल्यांकन करने का महत्व।

1 नेतृत्व के माध्यम से समानता और समावेशन को प्रोत्साहित करना

यह खुशी मनाने और गर्व करने का विषय है कि भारत की आबादी इतनी असमान है। 'असमान' शब्द का अर्थ है 'ढेर सारी विविधता दर्शाना' या 'बहुत अलग होना'। विविधता न केवल जीवन में दिलचस्पी लाती है, बल्कि जटिल और परिवर्तनशील विश्व में अनेक समाधान और संभावनाएं भी पेश करती हैं।

विद्यालय की विविधता कई कारकों से संबंधित हो सकती है जैसे भाषा, नस्ल, लिंग, जाति, वर्ग, आय-स्तर, शारीरिक क्षमताएं, आवास, उम्र या पहले की गई पढ़ाई। कक्षा में भर्ती होते समय किन्हीं भी दो विद्यार्थियों के प्रारंभ बिंदु एक समान नहीं होते हैं, और न ही सीखने के तरीके या पाठ्यचर्या के साथ संबंध समान होते हैं। वह शिक्षक जो अलग अलग पृष्ठभूमियों, संस्कृति और अनुभवों को समझता और मान देता है, उसके विद्यार्थियों को अधिगम की ऐसी प्रक्रिया में संलग्न करने की अधिक संभावना है जो उनमें से प्रत्येक के लिए सार्थक है।

एनसीएफ में एनपीई से यह उद्धृत किया गया है:

समानता को प्रोत्साहित करने के लिए, सभी को, न केवल सुलभता में बल्कि सफलता की अवस्थाओं में भी, समान अवसर प्रदान करना आवश्यक होगा। इसके अलावा, सभी की अन्तर्निहित समानता की जागरूकता का निर्माण मूल पाठ्यचर्या के माध्यम से किया जाएगा। इसका प्रयोजन सामाजिक परिवेश और जन्म के संयोग के माध्यम से संचारित पूर्वाग्रहों और पेचीदगियों को दूर करना है।

इस नीति की भाषा को आपके विद्यालय और कक्षाओं के परिवेश में चरित्रार्थ करना कठिन हो सकता है। इसलिए, यह विद्यालय प्रमुख का दायित्व है कि वह विविधता, समानता और समावेश से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने के लिए अपने स्टाफ और वृहद् विद्यालय समुदाय की मदद करे। इसके लिए तीन प्रारंभिक कदम उठाने की जरूरत पड़ सकती है:

1. सुनिश्चित करना कि सभी शिक्षक और वृहत् विद्यालय समुदाय विद्यालय के सन्दर्भ में विविधता, समानता और समावेश के मुद्दों को समझें। इसमें यह जानना शामिल है कि इसके विद्यार्थियों के परिणाम और उनकी पद्धतियों पर हो सकने वाले परिणाम क्या हैं?
2. असमानता या बहिष्करण के मुद्दों को संबोधित करने के लिए हस्तक्षेपों या कार्यवाहियों की सहयोगात्मक रूप से योजना बनाना और उनका क्रियान्वयन करना। यह समझना कि उनकी अपनी अध्यापन परिपाटियों और/या सीखने के अवसरों को बदलने की कार्यवाहियां कैसे अंतर पैदा कर सकती हैं।
3. यह समझना कि पढ़ाने, सीखने या ग्राम्य सहायता में बदलावों की कैसे निगरानी करके यह सुनिश्चित किया जाएगा कि उनका विद्यार्थियों के अधिगम-प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव हो।

यदि आपने इकाई अपने *विद्यालय को सुधारने के लिए विविधता पर डेटा का उपयोग करना* पढ़ी है, तो आपने पहले से ही इस बारे में सोच लिया होगा कि आपके विद्यालय के सन्दर्भ के भीतर डेटा कैसे विविधता के मुद्दों को स्पष्ट कर सकता है, और आपके विद्यालय के लिए प्राथमिकता क्षेत्र विकसित करने लगे होंगे। जो डेटा आपने एकत्र किया है और जो प्राथमिकता क्षेत्र आपने पहचाने हैं, वे यह समझने के लिए महत्वपूर्ण होंगे कि आपके स्टाफ को उनकी अध्यापन पद्धतियों में अधिक समावेशी होने के लिए कैसे प्रेरित किया जाय।

2 विविधता, समानता और समावेशन को समझने में अन्य लोगों की सहायता करना

आपने देखा होगा कि आपके स्टाफ में से कुछ लोगों को समावेश की शब्दावली की पहले से ही अच्छी जानकारी है — जबकि कुछ लोगों को नहीं भी है। कई लोगों को विविधता, आपके विशिष्ट विद्यालय सन्दर्भ और विद्यार्थियों के परिणामों पर उसके विशिष्ट प्रभाव के बीच संबंध को समझने के लिए अतिरिक्त व्यावसायिक विकास की जरूरत पड़ेगी।

इसलिए आपको इस कार्यक्रम के निहितार्थों को व्यक्तिगत रूप से समझने में स्टाफ और वृहत् समुदाय की मदद करने के लिए समय देने की जरूरत पड़ेगी। यह आप वृहत् विद्यालय को शामिल करने से पहले कुछ प्रारंभिक परिवर्तन करने के लिए एक लघु कार्यकारी समूह का संगठन करके, या इसे शुरू से ही एक समग्र विद्यालय मुद्दे के रूप में संबोधित करके कर सकते हैं। आप जो भी मार्ग अपनाएं, विषय का परिचय देने में आपकी मदद के लिए और समानता, विविधता और समावेश का मतलब समझने के लिए स्टाफ की मदद करने के लिए आपको कुछ साधनों की जरूरत पड़ेगी। संसाधन 1, 'सभी को शामिल करना', आपके सहकर्मियों के साथ साझा करने के लिए उपयोगी हो सकता है।

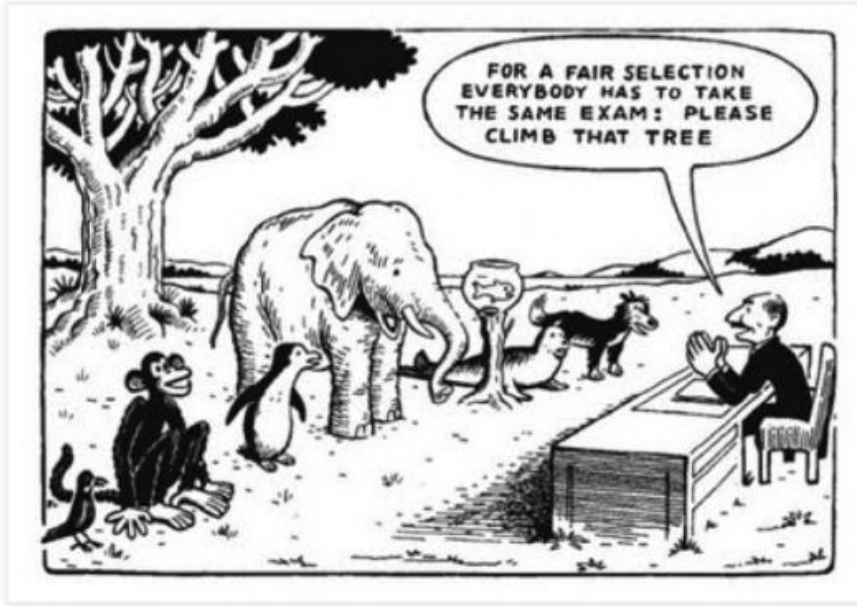
वीडियो: सभी को शामिल करना



आर्टाइल्स और अन्य (2006) ने शिक्षा के परिवेश में समावेश के चार आयामों की पहचान की है जो एक प्रारंभिक शुरुआती बिंदु के रूप में उपयोगी हो सकते हैं:

1. पहुँच (Access) : जहाँ कोई निःशक्तता या मेडिकल अवस्था, निर्धनता (विद्यालय के लिए यूनिफार्म या फीस वहन करने में सक्षम न होना, परिवार के लिए पैसे कमाकर देने की जरूरत, पढ़ने के लिए घर में जगह न होना), स्थिति (विद्यालय तक का सफर बहुत कठिन या उनकी उम्र के लिए खतरनाक है), देखभाल करने के दायित्व, या सांस्कृतिक कारणों के कारण शिक्षा को प्राथमिकता न दिया जाना हाजिरी में आने वाली रुकावटों में शामिल हैं।
2. स्वीकृति (Acceptance) : वह 'स्थिति' जो शिक्षार्थियों को विद्यालय पहुँचने पर दी जाती है, जो शिक्षक के रवैयों से प्रभावित हो सकती है। शिक्षकों को अपेक्षा होनी चाहिए कि सभी शिक्षार्थी मनुष्य हैं और वे उनके पृष्ठभूमि कारणों के बावजूद सफल होने में सक्षम होंगे।
3. प्रतिभागिता (Participation) : सीखना एक सामाजिक गतिविधि है; ज्ञान की संरचना तब होती है जब हम अन्य लोगों के साथ गतिविधि में भाग लेते हैं तथा औरों के साथ संयुक्त अर्थों में आते हैं। शिक्षार्थियों को एक दूसरे के साथ और शिक्षकों के साथ अंतर्क्रियाओं में भाग लेने का अवसर दिया जाना चाहिए।
4. उपलब्धि (Achievement) : 'समावेश' का मतलब यह नहीं होता कि सभी शिक्षार्थी समान स्तर तक हासिल करेंगे। समावेशी सन्दर्भ में, 'उपलब्धि' का मतलब है सभी शिक्षार्थियों को कई अलग अलग सन्दर्भों में, न कि केवल निश्चित और औपचारिक राष्ट्रीय परीक्षाओं में, अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है। शिक्षकों को शिक्षार्थियों/विद्यार्थियों को अपने विविध प्रकार के कौशलों, क्षमताओं और ज्ञान का प्रदर्शन करने की अनुमति देनी चाहिए ताकि उनकी उपलब्धि को समुदाय के भीतर मान्यता और महत्व दिया जा सके।

चित्र 2 इस बात का एक रोचक उदाहरण देता है कि व्यक्तियों या समूहों को निर्धारित किए गए कार्यों द्वारा अलग करना कितना आसान है।



"Everybody is a genius. But if you judge a fish by its ability to climb a tree, it will live its whole life believing that it is stupid."

-Albert Einstein

चित्र 2 आपके द्वारा निर्धारित कार्यों को समावेश को प्रोत्साहित करना चाहिए।

चित्र 2 में दर्शाए गए जानवर आपकी कक्षाओं के विद्यार्थियों की तरह विविध हैं। उनके भिन्नताओं को सकारात्मक ढंग से पहचानना महत्वपूर्ण है, न कि उन्हें इस तरह के काम देना कि जो कुछ लोगों के लिए असुविधाजनक हों और अन्य लोगों के लिए अनुकूल। चित्र में यह स्पष्ट है कि कौन सा जानवर तय किए गए काम में सफल होने वाला है; विद्यार्थियों की कक्षा भी बहुत कुछ ऐसी ही होती है। कार्य निर्धारित करते समय शिक्षक अक्सर जानते हैं कि कक्षा के कौन से विद्यार्थी उसमें सफल होने वाले हैं।

तथापि, कुछ विद्यार्थी केवल कार्यों में ही असुविधा नहीं महसूस करते हैं। विद्यालय पर्यावरण का मतलब यह हो सकता है कि कुछ विद्यार्थियों को समान पहुँच नहीं होती या वे अनावश्यक रूप से संघर्ष करते हैं (उदाहरण के लिए, बाथरूमों या शौचालयों की सुविधाओं का उपयोग करने में)। ये अतिरिक्त बाधाएँ विद्यार्थियों में तनाव उत्पन्न कर सकती हैं और इसका मतलब यह भी हो सकता है कि वे अलग-अलग होने की चिंता के कारण विद्यालय में हाजिर न हों। इसलिए अंतर का 'सामान्यीकरण' करना आवश्यक हो जाता है ताकि अतिरिक्त जरूरतें या अनुकूलन होने से संबद्ध कोई शर्म या उलझन न हो।

गतिविधि 1: अभ्यास पर समावेश के निहितार्थों के बारे में वार्तालाप शुरू करना

आर्टाइल्स और अन्य के समावेशन के आयामों और चित्र 2 में दिए गए कार्टून पर विचार करें। अपने विद्यालय में समावेश को प्रोत्साहित करने के बारे में स्टाफ के साथ वार्तालाप शुरू करने के लिए इन संसाधनों का उपयोग आप कैसे करेंगे? सोचें कि वे निम्नलिखित पर चर्चा करने के लिए क्या अवसर प्रदान करते हैं:

- आपके विद्यालय का विशिष्ट सन्दर्भ
- विशिष्ट विषय क्षेत्रों के लिए निहितार्थ
- अध्यापन के प्रकार और होने वाली अधिगम-प्रक्रिया के लिए निहितार्थ (आकलनों सहित)।

परिचर्चा

आपने समझ लिया होगा कि सीखने के समावेशी पर्यावरण का निर्माण उस अध्यापन के साथ जुड़ा है जो कक्षा की विशिष्ट जरूरतों के लिए सक्रिय, वैयक्तिक रूप से संरचित और उपयुक्त अधिगम को प्रोत्साहित करता है। यह बात नितांत असंभव है कि, कोई पाठ्यक्रम जिसकी रचना एक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से एक अंतिम लिखित इतिहास के लिए काम करने वाले सभी विद्यार्थियों के इर्दगिर्द की गई है, वह ऐसा समावेशी परिवेश बनाएगा जहाँ सभी विद्यार्थी अपनी क्षमता को हासिल करेंगे।

आपने गतिविधि 1 में इस बात पर चिंतन किया होगा कि कैसे कुछ विशिष्ट विषयों में विद्यार्थियों के कतिपय समूहों से संबंधित विशिष्ट समावेश संबंधी समस्याएँ होती हैं, या कि आपके सन्दर्भ में एक अधिभावी कारक है जो विद्यार्थियों की पाठ्यचर्या तक पहुँच को प्रभावित करता है।

आपके विचार चाहे जो भी हों, ये संसाधन इस बारे में वार्तालाप के लिए एक प्रारंभ बिंदु प्रदान कर सकते हैं कि कक्षा और विद्यालय के परिवेश में रवैये और कार्यवाहियों दोनों में समावेशी होने का क्या मतलब होता है। ऐसा करते समय इस तथ्य को मानना और उससे शिक्षा प्राप्त करना उपयोगी है कि आपके स्टाफ में से कइयों के पास असुविधा या बहिष्कार के निजी अनुभव हो सकते हैं। यदि व्यक्तियों के पास निजी अनुभव नहीं हैं, तो वे ऐसे किसी व्यक्ति को जानते होंगे जिसको ऐसा अनुभव हुआ होगा, या वे किसी परिदृश्य में अपनी भावनाओं की कल्पना करने में सक्षम हो सकते हैं। इन अनुभवों का उपयोग रवैयों और मान्यताओं में परिवर्तन को सुगम करने में अधिगम एक शक्तिशाली साधन हो सकता है। अब गतिविधि 2 आजमाएं, और विचार करें कि ऐसी गतिविधि आपके विद्यालय में एक समावेशी संस्कृति का विकास करने में आप और आपके स्टाफ की कैसे सहायता कर सकती है।

गतिविधि 2: निजी अनुभव का उपयोग करना

ऐसे किसी समय को याद करें जब आपके अपने अंतर (जाति, शिक्षा, भाषा, वर्ण, लिंग आदि), या शायद आपके करीबी या पहचान वाले किसी व्यक्ति के अंतर ने विद्यालय के अनुभव पर नकारात्मक या अपेक्षा से कम वाँछित प्रभाव उत्पन्न किया था। निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दें:

- अन्य लोगों के सम्मुख बहिष्कार या भेदभाव से आपको कैसे महसूस हुआ?
- आपने ऐसी परिस्थिति का सामना कैसे किया?
- आपको कैसी सहायता पसंद होती?
- क्या आपको वाँछित सहायता प्राप्त हुई?
- आपके उत्तर इस बारे में किस बात को स्पष्ट करते हैं कि बहिष्कृत या भेदभाव महसूस करने वाले विद्यार्थी आपके विद्यालय में कैसा महसूस करेंगे?

परिचर्चा

आपको महसूस हो सकता है कि आपने अपने जीवन में पहले कभी केवल जरा से भेदभाव का अनुभव किया है, या हो सकता है आपने इसके बारे में अब तक 'भेदभाव' होने के रूप में नहीं सोचा था और किसी अन्यायपूर्ण व्यवहार को बस

'यह दुनिया की रीत है' मानकर स्वीकार कर लिया था। तथापि, आपने अन्य विद्यार्थियों की ओर अन्याय की उल्लेखनीय हरकतें अवश्य देखी होंगी, और संभव है आप भी उसमें लिप्त थे। पीछे देखते हुए, हमें इन चीजों को देखने की पश्च दृष्टि का लाभ मिलता है। संभवतः आपने कुंठा, अन्याय या शक्तिहीनता का अनुभव किया था।

एक विद्यार्थी के रूप में, सत्ताधारियों को चुनौती देना बहुत कठिन लग सकता है, तब भी जब आप महसूस करते हैं कि वह अन्याय है। हो सकता है उस अनुभव का आपको निरुत्साहित करने का प्रभाव हुआ होगा जब आपको तिरस्कृत या अनदेखा किया गया होगा? हो सकता है ऐसे कोई शिक्षक रहे होंगे जो अपने काम में अधिक समान और निष्पक्षता का व्यवहार करते होंगे और उनके पाठों में आपने समर्थित महसूस किया होगा, या आपको अपने परिवार से सहायता मिली होगी, जो आपको प्रयास करते जाने के लिए प्रोत्साहित करता होगा। यदि आप जो कुछ करते हैं विद्यालय उसमें दिलचस्पी नहीं लेता प्रतीत होता है तो अधिगम प्रयास करते जाना कठिन है, और इससे आपकी सफलता कुछ हद तक प्रभावित हो सकती है।

हो सकता है विद्यालय में भेदभाव के अलग अलग स्तर काम कर रहे हों और विद्यालय-प्रमुख और शिक्षकों को सतर्क रहने की जरूरत हो। निजी भेदभाव व्यक्ति के चेतन या अचेतन पूर्वाग्रह के माध्यम से व्यक्त हो सकता है। उदाहरण के लिए, ऐसा कोई परिदृश्य हो सकता है जिसमें किसी विद्यार्थी को उसकी स्पष्ट योग्यताओं के बावजूद उसे विद्यालय की क्रिकेट टीम में नहीं चुना जाता है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि शिक्षक उनके गाँव के किसी लड़के को टीम में नहीं लेना चाहते हैं और मानते हैं कि अन्य लड़के भी ऐसा ही (चयन) महसूस कर सकते हैं।

लेकिन संस्थानों में भेदभाव का अधिक व्यापक और छिपा हुआ स्तर हो सकता है जो विद्यालय की संस्कृति को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित कर सकता है। संस्थागत भेदभाव अक्सर निर्विवाद होता है, खास तौर पर यदि वह काम करने का सामान्य तरीका बन जाता है। उदाहरण के लिए, यह मान्यता काफी विस्तृत हो सकती है कि लड़कियाँ गणित या विज्ञान में अच्छा प्रदर्शन नहीं करती हैं। यह बात स्पष्ट रूप से मिथ्या है, और फिर भी लड़कियों को अनिवार्य पाठ्यचर्या से परे इन विषयों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। एक और उदाहरण यह साझा मान्यता हो सकता है कि एक विशिष्ट जातीय समूह के विद्यार्थियों को हमेशा हाथ से की जाने वाली नौकरियाँ ही मिलेंगी, इसलिए उनकी साहित्य और कलाओं की सराहना को विस्तृत करने का कोई मतलब नहीं है; इसलिए इस समूह के कवियों और कलाकारों को कभी पहचाना या प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। संस्थागत भेदभाव इस धारणा पर काम करता है कि हर चीज जैसे है वैसे ही सही है और किसी भी चीज को बदलने की जरूरत नहीं है।

एक नेता के रूप में, आपको जहाँ कहीं भी संस्थागत भेदभाव मिले उसे पहचानने और चुनौती देना सीखना चाहिए जिसके लिए आपको अपने सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने के नतीजों में समानता पर ध्यान केंद्रित करना होगा। चुनौतीपूर्ण 'कायदे' बहुत कठिन हो सकते हैं। चीजों की अलग ढंग से कल्पना करने का प्रयास करें और स्वयं से पूछें कि क्या आपके पास अपनी धारणाओं के लिए अच्छे प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए, लड़कियों के बारे में (गलत) धारणा को लें कि लड़कियों को गणित नहीं आता है। आप स्वयं से पूछ सकते हैं: मैंने क्या पढ़ा है जो मुझे यह बात बताता है? क्या मैं किसी अच्छी महिला गणितज्ञ को जानता हूँ? यदि लड़कियों को उन्नत गणित अधिगम अवसर कभी भी न दिया जाय तो वे अपनी योग्यताओं को कैसे दर्शा सकती हैं?

गतिविधि 3: शिक्षा एक अलग जीवन का प्रवेशद्वार है

नीचे भारत के 11 वें राष्ट्रपति, डॉ. ए.पी.जे. कलाम के बारे में विकिपीडिया से लिया गया एक उद्धरण प्रस्तुत है। जब आप उसे पढ़ें, तब सोचें कि कैसे वे एक सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से होने के बावजूद शैक्षणिक रूप से सफल होने में समर्थ हुए। जब उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी तो वह हमेशा ही आसान नहीं थी और वे हमेशा ही सफल नहीं हुए थे, लेकिन उन्होंने अविश्वसनीय प्रतिस्पर्धा और आत्म-विश्वास दर्शाया।

आवुल पकीर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम (जन्म 15 अक्टूबर 1931), जिन्हें आम तौर पर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय वैज्ञानिक और प्रशासक हैं जो 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति रहे।

अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित रामेश्वरम में एक नाविक, जैनुलाबदीन और एक ग्रहिणी आशियम्मा के यहाँ एक तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। वे एक निर्धन पृष्ठभूमि से आए थे और उन्होंने अपने परिवार की आय में योगदान देने के लिए छोटी उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद, कलाम ने अपने पिता की आय में आर्थिक रूप से योगदान करने के लिए अखबार बाँटे। अपने विद्यालयी वर्षों में, उन्हें औसत ग्रेड मिलते थे, लेकिन उनका वर्णन एक मेधावी और मेहनती विद्यार्थी के रूप में किया जाता था जिसे पढ़ने की दृढ़ इच्छा थी और अपनी पढ़ाई, विशेषकर गणित, पर वह घंटों व्यतीत करते थे।

रामेश्वरम प्राथमिक विद्यालय में अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी करने के बाद, कलाम सेंट जोसेफ्स कॉलेज, तिरुचिरापल्ली, जो तब मद्रास विश्वविद्यालय के साथ संबद्ध था, में पढ़ने गए, जहाँ से वे 1954 में भौतिक विज्ञान में स्नातक बने। कोर्स की समाप्ति तक, वे उस विषय के बारे में उत्साही नहीं थे और उन्होंने बाद में उन चार वर्षों के बारे में खेद व्यक्त किया जब उन्होंने उसका अध्ययन किया था। फिर वे 1955 में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का अध्ययन करने के लिए मद्रास चले गए।

उन्हें अपनी आत्मकथा *विंग्स ऑफ फायर* (2002) में यह कहते हुए उद्धृत किया जाता है: 'मैंने अपने तीन भाईयों और बहनों की तरह ही, ईमानदारी और आत्मानुशासन अपने पिता से विरासत में प्राप्त किया; मेरी माँ से विरासत में मैंने अच्छाई और गहरी दयालुता में विश्वास प्राप्त किया।'

उद्धरण को पढ़ने के बाद, निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें:

- आपके विचार में ये गुण कहाँ से आए और किस तरह से विकसित किए गए? इतनी मेहनत से पढ़ाई करने की प्रेरणा उन्हें कहाँ से मिली होगी और किसकी सहायता के साथ? उनके निकटतम परिवार, उनके समुदाय और विद्यालय में उनकी पढ़ाई के बारे में सोचें।
- क्या ऐसे अन्य समर्थन/केस स्टडी हैं जो आपके स्टाफ और विद्यार्थियों में समावेश और महत्वाकांक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं? इनमें शायद विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी हो सकते हैं जिन्होंने आपका विद्यालय छोड़ दिया है और आगे चलकर अनेकों क्षेत्रों में बहुत सफल हुए हैं, या बाधाओं को पार करके मशहूर हस्तियाँ बने हैं। रवैयों और बर्ताव को चुनौती देने के लिए आप इन केस स्टडी का उपयोग कैसे करेंगे?

उपरोक्त उद्धरण अपने मातापिता से डॉ. कलाम को मिली विरासत का वर्णन करता है; वे यह भी उल्लेख करते हैं कि उनके भाईयों-बहनों को भी वही विरासत मिली थी। फिर भी उनके विस्तृत परिवार में उच्चतर शिक्षा में जाने या शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने की इच्छा नहीं थी। उनके मातापिता के प्रभाव के साथ-साथ, संभवतः उनके समुदाय के सदस्यों ने, जो उनके अपने सादगीपूर्ण मूल से ऊपर उठकर उनका अधिक विस्तृत सन्दर्भ में प्रतिनिधित्व करने की संभावना को पसंद करते हुए, उन्हें प्रोत्साहित किया – उन्हें तो पता भी नहीं था कि वे भारत के राष्ट्रपति बनेंगे। यह भी संभव है कि विद्यालय की पढ़ाई ने डॉ. कलाम की उपलब्धियों में प्रमुख भूमिका निभाई। संभवतः उनके शिक्षक उनकी निम्न स्थिति के बावजूद उनका सम्मान करते थे और उन्हें प्रोत्साहित करते थे। संभव है कि विद्यालय सभी में महात्वाकांक्षा का निर्माण करते हुए, विद्यार्थियों के शिक्षा के अगले स्तर में प्रगति करने के लिए कड़ी मेहनत करते थे।

केस स्टडी का उपयोग करना, खास तौर पर जो स्थानीय समुदाय से संबंधित हैं, रवैयों को बदलने का शक्तिशाली साधन है। केस स्टडी को प्रदर्शित करना, उनका पाठ्यचर्या की गतिविधियों के हिस्से के रूप में उपयोग करना, अतिथि वक्ताओं को अपनी सफलताओं और बाधाओं को पार करने के उनके तरीकों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित करना, और व्यक्तिगत कहानियों से सीखे जा सकने वाले पाठों पर चर्चा करना, ये सभी समावेश के बारे में चर्चाओं में स्टाफ और विद्यार्थियों को शामिल करने के उपयोगी तरीके हो सकते हैं।

3 अधिगम-परिणामों को सुधारने के लिए कार्यवाहियों को प्राथमिकता निर्धारण

अधिगम-पहुँच को कई कारक प्रभावित कर सकते हैं, जैसे हाजिरी, यूनिफार्म खरीद सकने में सक्षम होना, विद्यार्थियों की विद्यालय तक पहुँचने की क्षमता या विद्यालय में शौचालय सुविधाओं की कमी। वैकल्पिक रूप से विद्यार्थी अपनी कक्षा में उनके अधिगम को प्रभावित करने वाली असुविधा महसूस कर सकते हैं जिसका कारण शिक्षकों का रवैया, प्रयुक्त पद्धतियाँ और सामग्रियाँ, और पढ़ाते समय पाठ्यक्रम का पढ़ाना हो सकते हैं।

आपको ऐसे विद्यार्थियों द्वारा की गई कड़ी मेहनत की जानकारी मिल गई है जो अपने भिन्न होने और विद्यालय की माँगों के अनुरूप 'अनुकूलित' होने की जरूरत महसूस करते हैं। इन माँगों में हो सकता है कि विद्यार्थियों को साफ-सुथरा लिखना चाहिए, या चार मीटर की दूरी पर स्थित ब्लैकबोर्ड को पढ़ना चाहिए, या कि उन्हें लंबे समय तक बैठना और सुनना चाहिए।

विद्यार्थी इन (और अन्य) माँगों के प्रति विभिन्न प्रकार की अनुक्रियाएं करते हैं, जो 'सरलता से' लेकर 'बड़ी कठिनाई से' तक विस्तृत होती हैं। कुछ विद्यार्थियों को, इन माँगों को पूरा करने के लिए न्यूनतम प्रयास की जरूरत पड़ती है। अन्य मामलों में, वे यह काम करने में केवल तभी सक्षम हो पाते हैं जब उन्हें अपने जीवन के उल्लेखनीय लोगों से सहायता मिलती है (आम तौर पर, मातापिता/अभिभावक और शिक्षक)।

यह स्पष्ट है कि विद्यालयों को ऐसी जूझी जाने वाली रणनीतियों और कठिनाइयों को 'अपरिहार्य' के रूप में देखने की स्थिति से हटने की जरूरत है। एनसीएफ के अनुसार परिवर्तन की जिम्मेदारी विद्यालय और शिक्षा देने वाले पर है जब वह घोषित करता है कि:

समानता के लिए शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अभिप्राय है सभी शिक्षार्थियों को उनके अधिकारों का दावा करने और साथ ही समाज और राज्य-व्यवस्था में योगदान करने में सक्षम करना। इस प्रकार, सीमान्त शिक्षार्थियों, और विशेष रूप से लड़कियों के लिए अपने अधिकारों पर दावा करने और साथ ही सामूहिक जीवन को मूर्तरूप देने में सक्रिय भूमिका निभाने को संभव करने के लिए, शिक्षा को उन्हें असमान समाजीकरण की असुविधाओं पर काबू पाने के लिए सशक्त बनाना चाहिए और स्वायत्त और समान नागरिक बनने की क्षमताएं विकसित करने में सक्षम करना चाहिए।

आपके विद्यालय में विद्यार्थियों के अलग अलग समूहों और सीखने के अवसरों तक उनकी पहुँच में अंतरों के बीच की कड़ी का विश्लेषण करना आवश्यक है। कैसे कुछ विद्यार्थी कुछ विषयों को शीघ्रता से समझने लगते हैं, इसमें संपर्क और अभ्यास की बड़ी भूमिका होती है, इस बोध ने अध्यापन को देखने के तरीके को बदल दिया। अच्छी अध्यापन कला को केवल जानकारी के प्रतिपादन से हटाकर ऐसी रणनीतियों के उपयोग की ओर ले जाया गया जो सीखने के समान नतीजे पाने के लिए शिक्षार्थियों को अपने खुद के तरीके खोजने में सक्षम करती थीं।

गतिविधि 4: सीखने तक पहुँच की समानता का विश्लेषण

तालिका 1 पर एक नज़र डालें, जो श्री शर्मा की डायरी से लिया गया एक उद्धरण है जिसमें उन्होंने अपने विद्यालय की विविधता की सीमा और इस बात पर चिंतन किया है कि उसे कैसे विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों के साथ जोड़ा जा सकता है। श्री शर्मा विविधता की सीमा, कितने विद्यार्थियों को शामिल किया गया और उसने आर्टाइल्स और अन्य के आयामों के अनुसार समावेश को कैसे प्रभावित किया, आदि बातों की पहचान करना चाहते थे। यह समझते हुए कि अधिगम-प्रक्रिया केवल विद्यालय में ही नहीं होती है, उन्होंने इस बारे में भी सोचा कि विद्यार्थियों की घरेलू स्थिति उनकी पढ़ाई को कैसे प्रभावित करती है। श्री शर्मा ने अपने नियोजन में मदद के लिए उस डेटा का उपयोग किया जो उन्होंने इकाई अपने विद्यालय को सुधारने के लिए विविधता पर डेटा का उपयोग करना में एकत्र किया था।

तालिका 1 श्री शर्मा के अपने विद्यालय में समानता के विषय में विचार। (*' अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति')

A	B	C-	D	E
#	विविधता का प्रकार	विद्यार्थियों का प्रतिशत	विद्यालय और घर पर सीखने में पहुँच, स्वीकृति, प्रतिभागिता और उपलब्धि का प्रतिशत अनुमान	कार्यवाहियों, हस्तक्षेप या वह स्टाफ जिसके साथ
1	लड़के	80	90%: लड़कों को उनकी कमाने की क्षमता का निर्माण करने के लिए प्रगति और विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं, वे प्रायः कक्षा में सामने बैठते हैं और पुरुष शिक्षक विशेष तौर पर उनका साथ देते हैं	
2	लड़कियाँ	20	30%: लड़कियों की शिक्षा को ऐसे निवेश के रूप में नहीं देखा जाता है जो परिवार को लाभ प्रदान करेगी; वे नियमित रूप से उपस्थित नहीं होती हैं और हो सकती हैं उनके पास कामकाज और कलम जैसे	
3	सीखने में निःशक्त	3	20%: इन बच्चों के लिए उपयुक्त रणनीतियों वाले शिक्षकों की मदद करने के लिए विशेषज्ञ उपलब्ध नहीं हैं; उनकी कठिनाइयाँ बहुत देर हो जाने तक या माता पिता के लज्जित होने तक सामने नहीं आती हैं	
4	सामाजिक-आर्थिक वर्णक्रम का ऊपरी स्तर	15	60%: परिवार ट्यूशन के रूप में सहायता खरीदते हैं; कुछ विद्यार्थी जानते हैं कि वे पारिवारिक व्यवसाय सभालेगे और इसलिए प्रेरणाहीन होते हैं; विद्यार्थियों के पास सीखने में मदद के लिए घर पर किताबें और	
5	सामाजिक-आर्थिक वर्णक्रम का निचला स्तर	85	40%: पढ़ने और लिखने के लिए बहुत थोड़ी घरेलू सहायता; खेतों और घर के कामकाज में मदद की अपेक्षा; कम हाजिरी; मातापिता की संलिप्तता का अभाव; अधिगम-सामग्रियों और संसाधनों का अभाव	
6	शारीरिक रूप से निःशक्त	2	30%: निःशक्त बच्चों की शिक्षा को परिवार के लिए लाभप्रद निवेश के रूप में नहीं देखा जाता है; पहुँच में सहायता के लिए भौतिक पर्यावरण में कोई अनुकूलन नहीं; विद्यालय और समुदाय में अन्य स्थानों तक	
7	विद्यालय में मुस्लिम विद्यार्थी	10	50%: शिक्षा को महत्व दिया जाता है लेकिन उसे शिल्पकला सीखने और धार्मिक शिक्षा के साथ स्पर्धा करनी पड़ती है; लड़कियों में एक अच्छी पत्नी बनने से परे शिक्षा में गण्य रुचि	
8	हिंदू	60	80%: लड़कों के लड़कियों की अपेक्षा परिवार से सहायता प्राप्त करने की अधिक संभावना होती है	
9	वंचित समुदाय (एससी/एसटी)*	30	40%: घरेलू सहायता में पहुँच की कमी; खेतों और घर के कामकाज में मदद की अपेक्षा; अल्पपोषित और ऊर्जा का अभाव होना; आत्मविश्वास की कमी	

श्री शर्मा की तालिका का उपयोग करते हुए, अपने विद्यालय के लिए अपनी अधिगम-डायरी (या संसाधन 2 में दिए गए टेम्प्लेट का उपयोग करें) में ऐसी ही एक तालिका बनाएं। इस बारे में विविध प्रकार की अवधारणाएं और परिप्रेक्ष्य पाने के लिए कि विद्यालय के अलग अलग क्षेत्रों में विद्यार्थी कैसे अनुभव करते और हासिल करते हैं, इस गतिविधि को स्टाफ के एक समूह के साथ पूरा करना उपयोगी साबित हो सकता है।

पहले कॉलम में, विविधता के अलग अलग प्रकारों को सूचीबद्ध करें जो आपने या तो अपने विद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों में देखे हैं या इकाई अपने विद्यालय को सुधारने के लिए विविधता पर डेटा का उपयोग करना में डेटा विश्लेषण के माध्यम से पहचाने हैं। आप चाहें तो निम्नलिखित कारकों पर विचार कर सकते हैं:

- जातीय समूह
- समुदाय
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति
- जाति
- लिंग
- भाषा या बोली
- धर्म और मान्यता प्रणालियाँ
- परिवार का आकार और संरचना
- परिवार में शिक्षा का इतिहास
- स्वास्थ्य
- भौगोलिक स्थिति।

यदि आपने इकाई पूरी कर ली है अपने विद्यालय को सुधारने के लिए विविधता पर डेटा का उपयोग करके, तो आप डेटा का उपयोग करके कॉलम बी और सी को पूरा, और कॉलम डी को शुरू कर सकते हैं। अनुमान का उपयोग चित्र का निर्माण करना शुरू करने के लिए किया जा सकता है, लेकिन आपको आगे जाँच-पड़ताल करने से पहले इनसे निष्कर्ष निकालने के बारे में सावधानी बरतनी चाहिए।

कॉलम डी आपको यह सोचना शुरू करने की अनुमति देता है कि अलग अलग समूह कैसे 'पहुँच' प्राप्त करते हैं, 'स्वीकार' किए जाते हैं, सीखने में भाग लेते हैं और हासिल करते हैं। यह केवल प्रारंभिक प्रतिक्रिया हो सकती है और आपको समय के साथ इन मुद्दों को अधिक पूर्णता से पहचानने के लिए अपने स्टाफ के साथ सहयोगात्मक ढंग से काम करना होगा।

कॉलम ई (जिसे श्री शर्मा के टेम्प्लेट में अब तक पूरा नहीं किया गया है) आपके विद्यालय में समावेश के मुद्दों को संबोधित करने के चरणों के बारे में सोचना शुरू करने में आपकी मदद करेगा। यह अंतिम कॉलम आपको अपने द्वारा पहचाने गए मुद्दों को संबोधित करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों के लिए आपके मन में आने वाले किसी भी विचार के बारे में नोट्स बनाने की अनुमति देता है।

श्री शर्मा द्वारा प्रयुक्त श्रेणियाँ उनके विद्यालय से संबंधित हैं। उन्होंने प्रत्येक श्रेणी के बारे में कुछ सामान्यीकरणों तक पहुँचने के लिए बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकों को देखा। उन्होंने केवल हिंदुओं और मुस्लिमों को अलग किया और हो सकता है की कभी और अन्य धार्मिक समूहों की विशेषताओं पर नज़र डाली हो।

परिचर्चा

आपने श्री शर्मा की सूची देखी होगी और आपको पता चला होगा कि समुचित रूप से समृद्ध परिवार से आने वाले हिंदू पुरुष विद्यार्थी अधिगम तक पहुँच प्राप्त करने का सर्वोत्तम मौका मिलता है। क्या आपकी तालिका में भी ऐसा ही है? यह संभवतः स्पष्ट है कि यदि छात्राएं आर्थिक रूप से कमजोर तबके, अल्पसंख्यक समुदाय या अनुसूचित जनजातियों और जातियों से हैं तो उनके पास सीखने के कम अवसर होते हैं। यदि उसमें कोई शारीरिक निःशक्तता है, तो हो सकता है वह कभी विद्यालय ही न जा पाए। यह बात दोहरी या तिगुनी असुविधा के विचार का परिचय देती है, और आपको एक से अधिक श्रेणी में आने वाले विद्यार्थियों के बारे में सतर्क रहना चाहिए।

आपको यह बात नोट करने में दिलचस्पी हुई होगी कि श्री शर्मा ने आसान धारणा नहीं बनाई कि उन्हें 'सुविधाप्राप्त' प्रतीत होने वाले समूह के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है – नोट करें कि चौथे समूह में शिक्षार्थियों (उच्चतर सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले) के संबंध में उन्होंने क्या पहचान की है: वे चिंतित थे कि हो सकता है कि विद्यार्थी सीखने में शामिल न हों, जो कि शिक्षक के लिए चिंता की बात है। साथ ही, यह तालिका यह तथ्य नहीं प्रदर्शित करती है कि विद्यार्थी अनेकों समूहों में शामिल हो सकते हैं – उनकी रूपरेखा में बहुआयामीयता होगी। इसलिए यह बात स्वीकार करना आवश्यक है कि यदि आप (उदाहरण के लिए)

छात्राओं को एक समूह में रखते हैं, तो वह बहुत असमान होगा और यही बात विशिष्ट धार्मिक पहचान से युक्त माने गए समूह के साथ भी होगी। यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्तियों को समूह के भीतर देखा जाय और विद्यालय की अधिगम प्रक्रिया के भीतर उनकी विशिष्ट स्थिति की पहचान की जाय।

इस बात की सर्वाधिक संभावना है कि आप दो या तीन मुद्दों को विद्यार्थियों के अधिगम-परिणामों पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हुए पहचानेंगे, और वे आपके प्राथमिकता वाले क्षेत्र बन जाएंगे। हो सकता है आपने इनकी पहचान इकाई अपने विद्यालय को सुधारने के लिए विविधता पर डेटा का उपयोग करना में कर ली हो और इन्हें संबोधित करने के लिए अपने स्टाफ के साथ सहयोगात्मक रूप से रणनीतिक योजना विकसित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी हो। लेकिन यह महसूस न करें कि हर कार्यवाही के लिए बड़ा कदम उठाना पड़ता है; शुरु में आप बहुत आसान परिवर्तन कर सकते हैं, जैसे कक्षा में बैठने की व्यवस्था।

डेटा का उपयोग करके और प्राथमिक क्षेत्र पहचानकर आप अपने स्टाफ के साथ पाठ्यचर्या में परिवर्तन करने के तरीकों, अध्यापन की रणनीतियों, समर्थन प्रणालियों या यहाँ तक कि यह बात समझने में सहयोग करना शुरू कर सकते हैं कि अधिक समावेशी अधिगम-परिवेश संरचना करने के लिए विद्यार्थी, शिक्षक और समुदाय के अन्य वयस्क कैसे अंतर्क्रिया करते हैं।

4 अधिक समावेशी अधिगम-पर्यावरण का सृजन करने के लिए सबके साथ साथ सहयोग करना

रवैयों, बर्तावों और प्रणालियों को अधिक समावेशी बनाने के लिए बदलने में समय और इस बात पर सतत ध्यान देने की जरूरत पड़ती है कि विद्यार्थियों की अधिगम-प्रक्रिया की भलाई के लिए ऐसे परिवर्तन जरूरी क्यों होते हैं। एक नेता के रूप में, हो सकता है आपने अपने खुद के परिप्रेक्ष्य को बदलना शुरू कर दिया हो और अधिक समावेशी रवैयों और बर्तावों का प्रतिरूपण कर रहे हो सकते हैं, लेकिन आपके स्टाफ का अधिक समावेशी होना तभी सुगम होगा यदि उन्हें अपने स्वयं की प्रथा के लिए निहितार्थों के बारे में सोचने, यह सुनने के लिए कि अन्य लोग क्या कर रहे हैं और अपने विचारों को साझा करने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर सशक्त किया जाय। समावेश सीखने के परिणामों को सुधारने में सर्वाधिक सफल तब होगा यदि वह विद्यालय भर में सुसंगत हो और विद्यार्थी के अनुभव के हर पहलू में स्थापित हो। इसलिए सारे स्टाफ को नियोजन की प्रक्रिया और कार्यवाही करने में सहयोगात्मक रूप से शामिल करना आवश्यक है।

अब एक विद्यालय प्रमुख, श्रीमती मेनन की कहानी पढ़ें, जिन्होंने अपने विद्यालय में समानता, विविधता और समावेश के कार्यक्रम की बात उठाने के लिए कार्यवाही करने की जरूरत महसूस की।

केस स्टडी 1: श्रीमती मेनन की स्टाफ बैठक

एक प्रारम्भिक विद्यालय की प्रिंसिपल, श्रीमती मेनन को एक आदेश मिला है, जो आर्थिक रूप से वंचित परिवारों को विद्यार्थियों के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण के बारे में है। वे और उनके सहकर्मियों का विचार है कि वंचित सामाजिक-आर्थिक तबके के 25 प्रतिशत नए विद्यार्थियों को उनके विद्यालय पर जबरदस्ती न थोपा जाए। लेकिन आदेश एक सर्कुलर के रूप में आया था जिसे वे नजरअंदाज़ नहीं कर सकती थीं। उन्हें यह समाचार अपने बोर्ड को सूचित करना था। वे उनसे पूछेंगे कि वे उसे कैसे करने वाली हैं। वह शुकुवार था, और उनके पास इस हेतु कोई योजना नहीं थी।

घर जाने के लिए बस में चढ़ने तक, श्रीमती मेनन अपने स्टाफ को उस सर्कुलर की प्रति भेज चुकी थी, जिसके साथ संलग्न एक नोट में उस मुद्दे के बारे में एक बैठक के लिए सोमवार को विद्यालय के बाद रुकने के लिए स्टाफ से अनुरोध किया गया था। उन्होंने गैर-शिक्षक और ऑफिस के स्टाफ को भी ऐसा ही नोट भेजा था। उन्होंने अपनी ऑफिस की अल्मारी से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और RTE की एक प्रति निकाली। वे उन्हें सप्ताहांत में पढ़ने और उस बैठक के लिए तैयारी करने जा रही थीं, जिसके तूफानी होने की संभावना थी।

सप्ताहांत के बाद विद्यालय में एक बहुत ही अलग था, श्रीमती मेनन ने प्रवेश किया। हालांकि वे सोमवार को नियमित रूप से विद्यालय में चलकदमी करती थीं, इस बार वे किसी खास चीज की तलाश में थीं। एक कक्षा के निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों से बहुत सारे प्रश्न पूछे जो उन प्रश्नों से बहुत अलग थे जिन्हें वे आम तौर पर अपने राउंड्स के दौरान पूछा करती थीं। फिर जब उन्होंने उनकी नोटबुकों की जाँच की, उन्होंने अधिगम-संसाधनों के बारे में पूछा और वे जो कुछ विद्यार्थियों ने लिखा था उसकी बजाय उनकी सामग्री में अधिक दिलचस्पी लेती लग रही थीं।

उस दोपहर, श्रीमती मेनन ने एक नए ढंग से बैठक की शुरुआत की। उन्होंने शिक्षकों से समूहों में बैठने को कहा। फिर प्रत्येक समूह में एक या दो गैर-शिक्षक स्टाफ के सदस्य शामिल हो गए। उन्होंने उनसे स्वयं के द्वारा पढ़े जा रहे एनसीएफ के कुछ अंशों को सुनाने को कहा जिनमें सामाजिक परिवर्तन पैदा करने में शिक्षा देने वाले के दायित्व की बात कही गई थी। उन्होंने संबंधित अंश की फोटोकॉपियाँ बनाई थीं और उन्होंने उसे समूहों को सौंप दिया। पठनों के अंत में, उन्होंने कहा:

शुकुवार तक, मैं सोचती थी कि हमें समाज के अनुकूल बनने में विद्यार्थियों की मदद करनी चाहिए। लेकिन, सप्ताहांत में, मैंने यह जानने की कोशिश में एनसीएफ को पहली बार ठीक तरह से पढ़ा कि यह सर्कुलर कहाँ से आया है। एनसीएफ अपेक्षा करता है कि, शिक्षा देने वालों के रूप में, हम असमानता और असंतुलन की समस्याओं से निपटेंगे जो हम सब जानते हैं कि हमारे समाज में विद्यमान हैं। वह हमसे अपने विद्यार्थियों को इस तरह से विकसित करने की अपेक्षा करता है कि हमारे देश को इन समस्याओं से निजात दिलाई जा सके। हमें सरकार से एक सर्कुलर मिला है जिसमें हमें अपने रवैये को बदलने का मौका दिया गया है। मैं चाहती हूँ कि आप सब, प्रत्येक समूह में, एक दूसरे के साथ विचार-विमर्श करें कि हम इस सर्कुलर के प्रति सकारात्मक उत्तर कैसे दे सकते हैं। हमें विद्यालय को इस बात का एक सजीव उदाहरण बनाना होगा कि हम देश में कैसे समानता ला सकते हैं।

प्रत्येक समूह पर एक रणनीति खोजने का

दायित्व है जिसे हम कार्यान्वयित करके सुनिश्चित कर सकें कि नए आने वाले इन विद्यार्थियों को अन्य विद्यार्थियों द्वारा वैसे ही स्वीकार किया जाय जैसे वे हर वर्ष किसी भी नए विद्यार्थी को स्वीकार करते हैं। बिना पूर्वाग्रह के!

क्या आप चुनौती स्वीकार कर सकते हैं?

स्टाफ रूम में सन्नटा छा गया। फिर एक शिक्षक ने कहा, 'हाँ, मैडम, बेशक, हम चुनौती स्वीकार करते हैं।' और फिर हर कोई काम में जुट गया।

श्रीमती मेनन समूह से समूह तक गई, चर्चाओं को ध्यान से सुना, और नोट किया कि शिक्षक उत्कंठा के साथ बोल रहे थे। वे जानती थीं कि वे उनके भविष्य के साथी शूरवीर बनेंगे और कि उन्हें उनसे प्रायः बात करनी होगी। बैठक के अंत में, श्रीमती मेनन के पास अपने बोर्ड द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने के लिए पर्याप्त रणनीतियाँ थीं। अपनी स्टाफ की बैठक को संचालित करने के तरीके को बदल कर, श्रीमती मेनन ने अपने स्टाफ को मुद्दों और समाधानों में

शामिल किया था, और अंतर्निहित ढंग से एक समावेशी दृष्टिकोण का प्रतिरूपण किया था और रणनीतियों की एक शृंखला उत्पन्न की थी जिसके बारे में उन्होंने खुद कभी नहीं सोचा होगा।

गतिविधि 5: नए तरीकों का अन्वेषण करने के लिए सहयोग करना

निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करते हुए अपनी अधिगम-डायरी में केस स्टडी 1 पर चिंतन करें:

- सर्कुलर में उठाए गए मुद्दों के बारे में श्रीमती मेनन के अपने रवैयों में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। सोचें कि इस परिवर्तन को प्रेरित करने के लिए उन्होंने सप्ताहांत में क्या किया होगा। आपको क्या लगता है कि यह परिवर्तन करना उनके लिए कितना आसान या कठिन रहा होगा? उस परिस्थिति में होने वाले किसी और व्यक्ति को अपनी मानसिकता में वही बदलाव करने में सक्षम होने में कौन से कारक बाधा डाल सकते हैं?
- बैठक में मौजूद स्टाफ से भी उनके रवैयों में उल्लेखनीय बदलाव करने को कहा गया। ऐसा करने में उनकी किसने मदद की? यदि आप भी उसी परिस्थिति में होते, तो स्टाफ को उनके परिप्रेक्ष्यों को बदलने के महत्व के बारे में समझने में मदद करने के लिए आपने किन तर्कों या संसाधनों का उपयोग किया होता?
- स्टाफ के प्रत्येक सदस्य को सहयोगात्मक ढंग से काम करने में सशक्त करने के लिए श्रीमती मेनन ने कौन से कदम उठाए थे?
- इस केस स्टडी से आपने क्या सीखा, जो ऐसे ही परिदृश्य में आपकी मदद कर सकता है?

परिचर्चा

आपने देखा होगा कि हालांकि श्रीमती मेनन अपने विद्यालय के अन्य समूहों से विद्यार्थियों को शामिल करने के बारे में शंकालु थीं, उन्होंने चुनौतियों को गले लगाया था और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने महसूस किया कि इन विद्यार्थियों को सफलतापूर्वक समायोजित करने के लिए, उन्हें उनके विद्यालय में आगमन और समावेश के लिए तैयारी करनी थी।

हमें यह नहीं बताया गया है कि श्रीमती मेनन ने सप्ताहांत में कौन सी कार्यवाहियाँ कीं जिनसे उनके अपने परिप्रेक्ष्य में बदलाव आया, लेकिन हम जानते हैं कि उन्होंने आधिकारिक दस्तावेजों को पढ़ा था। इस बात की संभावना नहीं है कि इसने अपने आप रवैयों में परिवर्तन लाया होगा, लेकिन हो सकता है कि उन्हें पता चला हो कि उन्हें इन मुद्दों में संलिप्त होने और उन्हें संबोधित करने की जरूरत है। तथापि, हम जानते हैं कि विद्यार्थियों की उपलब्धि और प्रतिभागिता को ध्यान में रखते हुए, श्रीमती मेनन अपनी रायों को बदलने को तैयार थीं। हर किसी के लिए ऐसा करना आसान नहीं होता है, और आपके विद्यालय में ऐसा स्टाफ हो सकता है जो चेत या अचेत ढंग से वैकल्पिक परिप्रेक्ष्यों या सोचने के तरीकों के विरुद्ध लड़ता है। इस विशिष्ट वृत्त अध्ययन में परिवर्तन को प्रेरित करने वाला एक बाह्य कारक और एक छोटी सी समयसीमा थी जिसने श्रीमती मेनन को अपने रवैयों को बहुत शीघ्रता से बदलने को मजबूर किया। तथापि, यह संभव है कि आप समय की अधिक लंबी अवधि में मुद्दों की पहचान और उन्हें संबोधित करेंगे, जिससे आप परिवर्तनों और सोचने के तरीकों का परिचय क्रमिक रूप से करने में सक्षम होंगे, ताकि उस स्टाफ को मना सकें जिसे परिवर्तन करने में कठिनाई होती है।

हम संदेह कर सकते हैं कि श्रीमती मेनन को पता था कि उनके स्टाफ के रवैयों को इतनी छोटी समयवधि में बदलना कठिन होने वाला है, इसलिए वे इस बारे में स्पष्ट थीं कि उनका स्टाफ क्या करने वाला है और इसलिए उन्होंने अपने सहयोगियों की मदद ली। सभी शोध साफ-साफ कहता है कि विद्यालय प्रमुख को शिक्षा के लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट रहना चाहिए और कि, कुछ लोगों के लिए अपने लक्ष्यों को परीक्षा-परिणाम से परे सभी के लिए समावेशी अधिगम अवसरों तक विस्तृत करके, शाला प्रमुख ऐसे विद्यालय का निर्माण करेगा जहाँ विद्यार्थी और स्टाफ समानता और संबंधों का महत्व समझते हैं।

क्या आपने देखा कि श्रीमती मेनन ने अपने स्टाफ से इन नए विद्यार्थियों को 'बिना किसी पूर्वाग्रह' के गले लगाने को कहा था? वह एक महत्वपूर्ण अनुरोध है। हम सब पूर्वाग्रह रखते हैं — जो कभी-कभी बुरे अनुभवों से उत्पन्न होते हैं, लेकिन अधिकतर वे वास्तविक प्रमाण की नींव पर नहीं खड़े होते हैं। हमारे पूर्वाग्रह की वैधता पर प्रश्न उठाने के लिए उसके आधार की जाँच करना हमेशा महत्वपूर्ण होता है। दुर्भाग्यवश जातीय समूहों, स्त्रियों या निःशक्त लोगों के विरुद्ध पूर्वाग्रह बहुत आम हैं, लेकिन विद्यालय ऐसी जगह हो सकता है जहाँ उस पूर्वाग्रह को वैध के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। श्रीमती मेनन ने उन पूर्वाग्रही रवैयों से भिड़ने का निर्णय लिया जिनके उन्हें अपने विद्यालय में मौजूद होने का संदेह था, और खुद अपने पूर्वाग्रहों का पुनःआकलन करके और उनका सामना करके स्वयं उदाहरण बनकर नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

आप यह भी नोट कर सकते हैं कि, नेता के रूप में, श्रीमती मेनन ने महसूस किया कि उन्हें 'समस्या' को खुद ही संबोधित नहीं करना था: उन्होंने उस विद्यालय के समुदाय के चुनौती का मिलकर सामना करने में मदद करने के लिए विद्यालय के भीतर उपलब्ध संसाधनों — विचारों और कौशलों — का उपयोग किया। और आपने यह भी देखा कि उन्होंने उस समुदाय के सभी सदस्यों को इसमें शामिल किया। शिक्षकों के रूप में हमारे लिए 'गैर-शिक्षक' स्टाफ के विरुद्ध भेदभाव करना आसान है: हो सकता है कि वे 'पढ़ाते' नहीं हैं, लेकिन कोई भी व्यक्ति जो विद्यार्थियों के साथ अंतर्क्रिया करता है वह विद्यालय समुदाय को समावेश के रंग में रंगने में महत्वपूर्ण सहयोगी होता है। इसलिए, वे एक अत्यंत मूल्यवान परिप्रेक्ष्य की पेशकश करते हैं जो पढ़ाने वाले सहकर्मियों के परिप्रेक्ष्य का पूरक होता है।

अपने स्टाफ से विद्यार्थियों के एक प्राथमिकता-युक्त समूह से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करवा लेने और यह सोच लेने के बाद कि इन विद्यार्थियों द्वारा अपनी क्षमता की सीमा तक हासिल कर सकना सुनिश्चित करने के लिए वे क्या कार्यवाही कर सकते हैं या मिलकर क्या कदम उठा सकते हैं, श्रीमती मेनन और उनके स्टाफ को फिर इन परिवर्तनों को कार्यान्वित करने की योजना बनानी होगी। ये परिवर्तन सन्दर्भ- और विद्यार्थी-विशिष्ट होंगे।

वीडियो: विद्यालय नेतृत्व – समावेश



गतिविधि 6: कार्यवाही योजना के लिए आधाररेखा

गतिविधि 5 में, श्री शर्मा ने नोट किया कि, पूर्वाग्रह की वस्तु होने के अलावा, शिक्षा और जागरूकता तक कम पहुँच वाले एक अल्पसंख्यक समुदाय के आर्थिक रूप से कमजोर तबके की एक छात्रा के लिए सीखने के अवसर भी कम थे। इस उदाहरण का उपयोग करें या कोई प्राथमिकता का क्षेत्र चुनें जिसकी पहचान आपने अपने विद्यालय में समावेश को संबोधित करने के लिए की है और सोचें कि उनकी जरूरतों को संबोधित करने के लिए कौन से कदम उठाए जा सकते हैं। आपने गतिविधि 6 में इसके बारे में सोचना शुरू कर दिया है, लेकिन अब अधिक पढ़ें, विशिष्ट कार्यवाही योजनाएं बनाने का समय आ गया है। आप चाहे तो अनुभूतियों को साझा करने और समुचित योजनाओं पर सहयोग करने के लिए इस पर किसी अन्य सहकर्मी के साथ काम कर सकते हैं। यदि आप निम्नलिखित को करने पर विचार करें तो यह मददगार हो सकता है।

अपने विद्यालय में अलग अलग अल्पसंख्यक समूहों के आर्थिक रूप से कमजोर तबके की लड़कियों (या आपकी पसंद की प्राथमिकता के विद्यार्थी) की पहचान करें। छात्रों, उनकी कक्षा, लिए गए विषयों, पारिवारिक और सामाजिक—सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, और हाजिरी तथा प्रत्येक विषय में प्राप्त किए गए ग्रेडों की पहचान करें। यदि आपको विद्यार्थियों की बड़ी संख्या पर ध्यान देना है, तो यह महसूस करने के लिए कि उनके सामने क्या मुद्दे हैं, छह से दस तक विद्यार्थियों के एक केस स्टडी समूह का चुनाव करें।

- यह आकलन करने के लिए कि विद्यार्थी किन विशिष्ट तरीकों से बहिष्करण या असुविधा का अनुभव करते हैं समावेश के चार आयामों (पहुँच, स्वीकृति, प्रतिभागिता और उपलब्धि) पर विचार करें।
- इन विद्यार्थियों के साथ कुछ विषयों पर बात करने के लिए अपने व्यस्त कार्यक्रम में से थोड़ा समय निकालें। उन्हें स्पष्ट रूप से अपने ध्यान का केंद्र मत बनाएं, बल्कि अवलोकन करें कि वे सीखने में किस तरह से शामिल होते हैं। स्वयं से पूछें: क्या वे भाग ले रहे हैं? उनकी सक्रिय प्रतिभागिता में क्या बाधाएं हो सकती हैं? पढ़ाने—अधिगम—प्रक्रिया में अधिक पूर्णता से भाग लेने के लिए उन्हें वैयक्तिक रूप से कैसे समर्थन दिया जा सकता है?
- आप चाहें तो उनकी पृष्ठभूमि और घरेलू परिस्थिति को अधिक संपूर्ण रूप से समझने का प्रयास कर सकते हैं। इन विद्यार्थियों के पालकों से मिलने के बारे में विचार करें। क्या उनमें से कोई आपसे उनके बच्चे, या विद्यालय में बच्चे के सामने आने वाली कठिनाइयों के बारे में बात करने के लिए मिला है? वे अपने बच्चों के लिए क्या चीज पसंद करेंगे? उन्हें घर पर अपनी पढ़ाई के लिए क्या सहायता या सीखने के क्या अनुभव प्राप्त होते हैं?
- छात्रों से विद्यालय में उनके अनुभवों और उनके अधिगम के बारे में बात करने की व्यवस्था करें। आपको सावधानी से आकलन करना होगा कि क्या इसे सामूहिक स्थिति में या वैयक्तिक रूप से करना सर्वोत्तम होगा, और आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि वे तनावमुक्त महसूस करें और आपकी प्रतिक्रिया से या उनके द्वारा कही गई बात के मूल का पता लगाकर अन्य लोगों की प्रतिक्रिया से डरे बिना निस्संकोच बात करें। तथापि, इन विद्यार्थियों की बातें प्रत्यक्ष रूप से सुनना आवश्यक है, क्योंकि उन्हें उनके सामने आ रही विशिष्ट कठिनाइयों की बहुत अच्छी पकड़ होने की संभावना है और वे संभवतः आपको बता सकते हैं कि कौन से हस्तक्षेप कारगर हो सकते हैं।

परिचर्चा

आप प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत शैक्षणिक रूपरेखा के लिए आधाररेखा का निर्माण कर रहे हैं। हालांकि इन विद्यार्थियों में कुछ कारक आम हो सकते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि उनके साथ केवल एक 'समूह' जैसा बर्ताव नहीं किया जाय। प्रत्येक में अन्य ऐसे कारक हो सकते हैं जो उनकी अधिगम—प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं; विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व भी अधिगम—उनकी तत्परता और लचीलेपन पर प्रभाव डालेंगे। इसलिए आप उनकी जरूरतों को संबोधित करने और उनके सीख को सुधारने के लिए केवल एकमात्र समाधान की तलाश नहीं करेंगे, हालांकि ऐसे सामान्य प्रकरण हो सकते हैं जिन्हें एक अकेले हस्तक्षेप के रूप में संबोधित किया जा सकता है।

अपने विद्यालय में समावेश के किसी विशिष्ट मुद्दे के बारे में विस्तार से सोच लेने के बाद, आपके इस बात की अच्छी समझ विकसित कर लेने की संभावना है कि पहचाने गए विद्यार्थियों को उनकी क्षमता तक हासिल करने से कौन रोक रहा है और आपने उठाए जाने वाले आवश्यक कदमों की पहले से ही पहचान कर ली होगी। अधिक समावेशी शिक्षण पर्यावरण की रचना करने के लिए हस्तक्षेप या कार्यवाहियाँ आपके सन्दर्भ में काफी विशिष्ट होंगी लेकिन उनमें निम्नलिखित शामिल हो सकता है:

- विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच सहयोग की अधिक जोरदार भावना का निर्माण करने पर विचार करना। यदि उन्हें इसमें कठिनाई हो रही है तो इसमें विद्यार्थियों को बोलने में सशक्त करना शामिल हो सकता है — जिससे स्टाफ को यह समझने में मदद मिलेगी कि विद्यार्थियों को पढ़ाई कैसी लग रही है — या शिक्षक यह प्रतिक्रिया पाने के लिए अधिक सक्रिय हो सकेंगे कि विद्यार्थियों को उनकी प्रगति के बारे में कैसा लग रहा है।
- विद्यार्थियों को उन निजी परिस्थितियों की चर्चा करने में समर्थ करने वाली प्रणालियों का विकास करना जिनका उनके अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- विद्यार्थियों को पूरी तरह से और प्रभावी ढंग से अधिगम—समर्थ बनाने के लिए शिक्षण पद्धतियों, अधिगम—संसाधनों या आकलन तकनीकों का समायोजन करना।
- विद्यालय के परिवेश या प्रणालियों में परिवर्तन करके सुनिश्चित करना कि विद्यार्थियों को सुरक्षित और समर्थित महसूस करने और सफल होने के लिए अधिकतम अवसर प्रदान किए जाएं।

- ऐसे विशिष्ट रवैयों या बर्तावों को संबोधित करना जिनका विद्यालय की संस्कृति पर समग्र रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इन्हें कार्रवाइयों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है, जैसे विद्यार्थियों को कैसे संबोधित किया जाता है या उनके बारे में बात की जाती है (उदाहरण के लिए, यदि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित विद्यार्थियों में दक्षता के अभाव को हमेशा बेहतर होने की आकांक्षा के बोध के बिना सामान्य माना जाता है) या कोई छोटी सी लगने वाली बात जैसे पुरस्कार या इनाम कैसे दिए जाते हैं (उदाहरण के लिए, यदि विद्यालय के इनाम केवल खेल के लिए दिए जाते हैं, और हमेशा विद्यार्थियों को दिए जाते हैं)।

गतिविधि 7: समावेश को प्रोत्साहित करने के लिए रणनीतिक योजना

अब आप 'एक अल्पसंख्यक समुदाय के आर्थिक रूप से कमजोर तबके की छात्राएं जिन्हें शिक्षा तक पहुँच और जागरूकता की कमी है और जो पूर्वाग्रह की वस्तु हैं' के इसी उदाहरण या अपने विद्यालय के लिए आपके द्वारा पहचाने गए वैकल्पिक समूह का उपयोग करके एक योजना बनाएंगे।

- विभिन्न कक्षाओं से विद्यार्थियों की पहचान करने के लिए शिक्षकों को भूमिकाएं आबंटित करें। नियोजन के प्रयोजनों के लिए कौन सा डेटा एकत्र किया जाना है इस पर चर्चा करें। साथ ही समझाएं कि उसे कैसे एकत्र किया जाना है (उदाहरण के लिए, अभिभावकों या अन्य लोगों से अंतर्क्रिया या अवलोकन द्वारा) और उसे कैसे रिकार्ड करना है।
- आप और आपके स्टाफ द्वारा एकत्र किए गए डेटा का अध्ययन करें, और अपनी उस सामूहिक परिकल्पना को पहचानें कि छात्राओं के अधिगम-परिणाम अगले सत्र और वर्ष भर में अलग कैसे होंगे।
- इन विद्यार्थियों के साथ एक समरूप समूह के रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत आधार पर काम करने की रणनीति विकसित करें, जिसमें उनके अभिभावकों और अपने स्टाफ को इस लक्ष्य की ओर शामिल करें। क्या अन्य लोग हैं जो आपको इस विषय पर सलाह देकर मदद कर सकते हैं?
- छात्राओं, अभिभावकों और स्टाफ के कौशलों, रवैयों और प्रेरणा की दृष्टि से अपने लक्ष्य तक पहुँचने में आने वाली बाधाओं का पहचान करें।
- पहचान करें कि आवश्यक कौशलों, रवैयों और प्रेरणा का निर्माण कैसे करना है (उदाहरण के लिए, प्रशिक्षण या कोचिंग), और उन संसाधनों के लिए बातचीत करें जिनकी जरूरत पड़ सकती है।
- प्रगति की निगरानी के लिए एक कार्यक्रम पर सहमत हों और अंत में परिणामों का मूल्यांकन अंत में करें।
- प्रगति पर चर्चा करने, प्रतिक्रिया देने और अपनाई गई रणनीति की समीक्षा करने के लिए इसमें शामिल लोगों के साथ सामयिक बैठकों की योजना बनाएं।

यह ऐसी गतिविधि नहीं है जिसे आप अकेले कर सकते हैं। समग्र-विद्यालय दृष्टिकोण को सुनिश्चित करने के लिए आपकी टीम के अन्य लोगों को शामिल करना होगा। आप लक्षित विद्यार्थियों या विद्यार्थी परिषद को शामिल करने पर भी विचार कर सकते हैं, यदि आपके विद्यालय में ऐसी कोई संस्था है। आप चाहें तो इस विशिष्ट समूह से संबंधित मुद्दों को समझने वाले किसी सामुदायिक समूह की सलाह या विशेषज्ञता का उपयोग भी कर सकते हैं।

5 प्रभाव का मूल्यांकन करना

आपके विद्यालय में आप समानता के लिए जिस चुनौती से लड़ रहे हैं वह चाहे कुछ भी हो, आपको योजना बनाने से पहले अपने प्रारंभ बिंदु के रूप में एक आधाररेखा स्थापित करनी होगी। यह आधाररेखा स्थिति का एक ईमानदार, तथ्यात्मक आकलन है जो उस असमानता की सीमा और लक्षणों का परिमाण निर्धारित करेगा जिससे आप निपटने जा रहे हैं। तब आप अपनी प्रगति की निगरानी कर सकेंगे ताकि आप अपने हस्तक्षेपों और संसाधन आबंटनों के प्रभाव का मूल्यांकन कर सकें क्योंकि तब आप यह प्रदर्शित करने में समर्थ होंगे कि स्थिति आपकी आधाररेखा से कितनी हद तक बदलती है।

आपकी कार्रवाइयों के प्रभाव के मूल्यांकन के दो रूप होंगे: डेटा का मूल्यांकन (जिसमें हाजिरी और दक्षता के परिणाम शामिल होंगे) और समूह के अनुभवों के बारे में जानकारी। उदाहरण के लिए, यदि हम 'एक अल्पसंख्यक समुदाय के आर्थिक रूप से कमजोर तबके की छात्राएं जिन्हें शिक्षा तक पहुँच और जागरूकता की कमी है और जो पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं' के उदाहरण का उपयोग करते हैं, आपको पता चल सकता है कि क्या छात्राएं अपने अनुभव को सुने जाने के साथ-साथ अधिक आवाज उठा रही हैं, जब वे सम्मान का अनुभव करती हैं तो अधिक महत्वपूर्ण होने का अनुभव करती हैं, और डेटा विश्लेषण के माध्यम से आप जान सकते हैं कि उन्होंने अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार किया है।

सोचें कि आप समावेशी तरीके से अपने प्रमाण को कैसे एकत्र करेंगे। आप चाहें तो विद्यार्थियों से स्वयं बात करने पर, या उन्हें एक दूसरे का साक्षात्कार करने और फिर आपको एक रिपोर्ट देने को कहने पर विचार कर सकते हैं।

मूल्यांकन का प्रयोजन यह सुनिश्चित करना है कि आपके द्वारा उठाए गए कदम न केवल बेहतर अधिगम-परिणामों तक पहुँचें बल्कि आपको इस प्रक्रिया से सीखने और यह पहचान करने में भी सक्षम करें कि यदि आपको इसे दोहराना पड़े तो इसमें क्या सुधार किया जा सकता है। इस बात की बहुत संभावना है कि यदि आप समावेश के ऐसे मुद्दों से निपट रहे हैं जो आपके विद्यालय में दक्षता पर इतना उल्लेखनीय प्रभाव डालते हैं कि उनका प्राथमिकता होना कभी खत्म नहीं होता। इसकी बजाय आप एक हस्तक्षेप का मूल्यांकन करेंगे और आगे की कार्रवाइयों की पहचान करेंगे जो स्थिति को और भी सुधारने के लिए की जा सकती हैं। इस तरह प्रक्रिया के चक्राकार होने की संभावना है।

इस तरह के दीर्घावधि रणनीतिक नियोजन और मूल्यांकन चक्र में आपको रवैयों और बर्तावों में परिवर्तन करने की ओर अपने स्टाफ की प्रतिबद्धता और उत्साह को बनाए रखने की जरूरत पड़ेगी। स्टाफ के साथ मूल्यांकनों के परिणामों को साझा करना महत्वपूर्ण है। स्टाफ की दिलचस्पी बनाए रखने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए उन्हें यह बताने से बेहतर कोई चीज नहीं है कि आप उन पर होने वाले प्रभाव की निगरानी कर रहे हैं। जब अभिलाषा बड़ी हो तो बड़े लक्ष्य की ओर उठाए गए छोटे कदमों को मान्यता देना आवश्यक है। इसी तरह, स्टाफ के साथ मूल्यांकनों को साझा करना एक-तरफा प्रक्रिया नहीं होनी चाहिए। उन्हें मूल्यांकन प्रक्रिया में योगदान करना होगा और मुद्दों को आगे संबोधित करने के लिए अगले कदमों की पहचान करने में आपकी मदद करनी होगी। उदाहरण के लिए, वे पूछ सकते हैं: उन्होंने किए गए परिवर्तनों का कैसे पता लगाया? उन्होंने इसमें शामिल विद्यार्थियों के अधिगम के बारे में क्या देखा है?

समावेशी प्रथाओं को विकसित करने में समय और बहुत सारी मेहनत लगती है। यदि आपको सफलता मिलती है, तो उन्हें केस स्टडी के रूप में लिखना या अपने काम को अन्य लोगों जैसे विद्यालय में या अन्य विद्यालयों के साथ साझा करने के अवसरों का आयोजन करना अत्यंत मूल्यवान होता है। बदले में, आपको पता लग सकता है कि अन्य लोगों ने भी आपके अपने प्राथमिकता वाले क्षेत्रों जैसे मुद्दों को संबोधित किया है और उनके पास उन्हें संबोधित करने के कुछ आज़माए हुए तरीके हैं जिन्हें आप उनसे सीख सकते हैं।

6 सारांश

इस इकाई में आपने सीखा कि विद्यार्थियों में विविधता और भिन्नताओं को क्रियात्मक ढंग से संबोधित करके समावेश को कैसे प्रोत्साहित किया जाय ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को समान शैक्षणिक अवसर प्रदान किए जा सकें और वह आपके विद्यालय में सीखने में भाग ले सके। कई विद्यार्थियों द्वारा अपने दैनिक जीवन में अनुभव की गई असमानताओं को संबोधित करना बेशक एक बहुत बड़ा काम है। लेकिन विद्यालयों में समानता की ओर बढ़ने और उनके जीवन में बदलाव लाने का वास्तविक अवसर है सीखने के लिए एक समावेशी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना, जिसे सारी स्टाफ टीम द्वारा साझा किया जाता है और उन विद्यार्थियों द्वारा देखा जाता है जो अपने समकक्षों का सम्मान करना और उन्हें महत्व देना सीख सकते हैं।

विद्यालय प्रमुख के रूप में आप बहुत कुछ कर सकते हैं, क्योंकि आप एक ऐसी अनोखी स्थिति में हैं जहाँ से आप कई हजार विद्यार्थियों के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं और उसमें आवश्यक बदलाव ला सकते हैं ताकि वे अपनी क्षमताओं का पूरा लाभ उठा सकें और अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचें। इसके लिए साहस, समीक्षात्मक विश्लेषण, महत्वाकांक्षा और निष्कपट मूल्यांकनों की जरूरत पड़ती है। यदि कदम बहुत बड़े लगते हैं, तो नन्हे कदमों से शुरू करें और ऐसे विद्यालय का निर्माण करें जो उस निष्पक्षता और समानता के लिए मशहूर हो जिस पर आपको गर्व हो सकता है। अपने अंतिम लक्ष्य को मन में रखें — कि आप ऐसा विद्यालय बनाना चाहते हैं जहाँ बच्चे के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र की घोषणा (धारा 29) के सिद्धांत सच साबित होते हैं और जिन पर आपके विद्यालय के समुदाय को गर्व हो सकता है:

- हर विद्यार्थी के व्यक्तित्व, प्रतिभाओं और क्षमताओं को पूरी तरह से विकसित करना
- हर विद्यार्थी को मानव अधिकारों, और साथ ही अपने तथा अन्य संस्कृतियों के लिए सम्मान करने को प्रोत्साहित करना।

यह इकाई इकाइयों के उस सैट या समूह का हिस्सा है जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रूपांतरित करने के महत्वपूर्ण क्षेत्र से संबंधित है (नेशनल कॉलेज ऑफ़ विद्यालय नेताशिव के साथ संरेखित)। आप अपने ज्ञान और कौशलों को विकसित करने के लिए इस सैट में आगे आने वाली अन्य इकाइयों पर नज़र डालकर लाभान्वित हो सकते हैं:

- प्रारम्भिक विद्यालय में शिक्षण-अधिगम में सुधारों का नेतृत्व करना
- माध्यमिक विद्यालय में शिक्षण-अधिगम में सुधारों का नेतृत्व करना
- अपने विद्यालय में आकलन का नेतृत्व करना
- निष्पादन बढ़ाने में शिक्षकों की सहायता करना
- शिक्षकों के पेशेवर विकास का नेतृत्व करना
- परामर्श देना और प्रशिक्षित करना
- अपने विद्यालय में अधिगम-प्रभावी संस्कृति का विकास करना
- विद्यार्थियों की प्रभावी शिक्षण-प्रक्रिया के लिए संसाधनों का प्रबंधन करना
- अपने विद्यालय में प्रौद्योगिकी के उपयोग का नेतृत्व करना।

संसाधन

संसाधन 1: सभी को शामिल करना

‘सबको शामिल करें’ का क्या अर्थ है?

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। विद्यार्थियों की भाषाएं, रुचियां और योग्यताएं अलग-अलग होती हैं। विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। हम इन भिन्नताओं को नज़रअंदाज नहीं कर सकते; वास्तव में, हमें उनका उत्सव मनाना चाहिए, क्योंकि वे एक दूसरे और हमारे अपने अनुभव से परे दुनिया के बारे में अधिक जानने का जरिया बन सकते हैं। सभी विद्यार्थियों को शिक्षा पाने और अधिगम अधिकार है चाहे उनकी सामाजिक स्थिति, योग्यता और पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और इसे भारतीय कानून और अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकारों में मान्यता दी गई है। 2014 में राष्ट्र को अपने पहले संदेश में, प्रधानमंत्री मोदीजी ने जाति, लिंग या आय पर ध्यान दिए बिना भारत के सभी नागरिकों का सम्मान करने के महत्व पर जोर दिया। इस संबंध में स्कूलों और शिक्षकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी के दूसरों के बारे में पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण होते हैं जिन्हें हो सकता है हमने नहीं पहचाना है या संबोधित नहीं किया है। एक अध्यापक के रूप में, आप में हर विद्यार्थी की शिक्षा के अनुभव को सकारात्मक या नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने की शक्ति है। चाहे जानबूझ कर या अनजाने में, आपके अंतर्निहित पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण इस बात को प्रभावित करेंगे कि आपके विद्यार्थी कितने समान रूप से सीखते हैं। आप अपने विद्यार्थियों के साथ असमान बर्ताव से बचने के लिए कदम उठा सकते हैं।

शिक्षा में सबको शामिल करना सुनिश्चित करने के तीन मुख्य सिद्धांत

- **देखना:** प्रभावी शिक्षक चौकस, सचेतन और संवेदी होते हैं; वे अपने विद्यार्थियों में परिवर्तनों को देखते हैं। यदि आप चौकस हैं, तो आप देखेंगे कि किसी विद्यार्थी ने कब कोई चीज अच्छी तरह से की है, उसे कब मदद की जरूरत है और वह कैसे दूसरों से संबद्ध होता है। आप अपने विद्यार्थियों के परिवर्तनों को भी समझ सकते हैं, जो उनके घर की परिस्थितियों या अन्य समस्याओं में परिवर्तनों को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। सबको शामिल करने के लिए

आवश्यक है कि आप अपने *विद्यार्थियों* से दैनिक आधार पर मिलें, और उन विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दें जो अधिकारहीन महसूस कर सकते हैं या भाग लेने में अक्षम होते हैं।

- **आत्म-सम्मान पर संकेन्द्रण:** अच्छे नागरिक वे होते हैं जो उसके साथ सहज रहते हैं जो वे हैं। उनमें आत्म-सम्मान होता है, वे अपनी ताकतों और कमजोरियों को जानते हैं, और उनमें पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता होती है। वे अपने आपका सम्मान करते हैं और दूसरों का सम्मान करते हैं। एक अध्यापक के रूप में, आप किसी युवा व्यक्ति के आत्म-सम्मान पर उल्लेखनीय प्रभाव डाल सकते हैं; उस शक्ति को जानें और उसका उपयोग हर विद्यार्थी के आत्म-सम्मान को बढ़ाने के लिए करें।
- **लचीलापन:** यदि आपकी कक्षा में कोई चीज विशिष्ट विद्यार्थी, समूहों या व्यक्तियों के लिए उपयोगी नहीं है, तो अपनी योजनाओं को बदलने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीला होना आपको समायोजन करने में सक्षम करेगा ताकि आप सभी विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल करें।

वे दृष्टिकोण जिनका उपयोग आप हर समय कर सकते हैं

- **अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन बनना:** जातीय समूह, धर्म या लिंग की परवाह किए बिना, अपने विद्यार्थियों के साथ अच्छा बर्ताव करके उनके लिए एक उदाहरण बनें। सभी विद्यार्थियों से सम्मान के साथ व्यवहार करें और अपने अध्यापन के माध्यम से स्पष्ट कर दें कि आपके लिए सभी विद्यार्थी बराबर हैं। उन सबके साथ सम्मान के साथ बात करें, जहाँ उपयुक्त हो उनकी राय को ध्यान में रखें और उन्हें हर एक को लाभ पहुँचाने वाले काम करके कक्षा की जिम्मेदारी लेने को प्रोत्साहित करें।
- **ऊँची अपेक्षाएं:** योग्यता स्थिर नहीं होती है; यदि समुचित समर्थन मिले तो सभी विद्यार्थी सीख और प्रगति कर सकते हैं। यदि किसी विद्यार्थी को उस काम को समझने में कठिनाई होती है जो आप कक्षा में कर रहे हैं, तो यह न समझें कि वह कभी भी समझ नहीं सकेगा। अध्यापक के रूप में आपकी भूमिका यह सोचना है कि हर विद्यार्थी के सीखने में किस सर्वोत्तम ढंग से मदद करें। यदि आपको अपनी कक्षा में हर एक से उच्च अपेक्षाएं हैं, तो आपके विद्यार्थियों के यह समझने की अधिक संभावना है कि यदि वे लगे रहे तो वे सीख जाएंगे। उच्च अपेक्षाएं बर्ताव पर भी लागू होनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि अपेक्षाएं स्पष्ट हैं और कि विद्यार्थी एक दूसरे के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करते हैं।
- **अपने अध्यापन में विविधता लाएं:** छात्र विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। कुछ विद्यार्थी लिखना पसंद करते हैं; अन्य अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए मस्तिष्क में चित्रण करना पसंद करते हैं। कुछ विद्यार्थी अच्छे श्रावक होते हैं; कुछ सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उन्हें अपने विचारों के बारे में बात करने का अवसर मिलता है। आप हर समय सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते, लेकिन आप अपने अध्यापन में विविधता ला सकते हैं और विद्यार्थियों को उनके द्वारा की जाने वाली अधिगम-कुछ गतिविधियों के विषय में किसी विकल्प की पेशकश कर सकते हैं।
- **शिक्षा को दैनिक के जीवन से जोड़ें:** कुछ विद्यार्थियों के लिए, आप उन्हें जो कुछ सीखने को कहते हैं, वह उनके दैनिक के जीवन के प्रति अप्रासंगिक लगता है। आप इसे यह सुनिश्चित करके संबोधित कर सकते हैं कि जब भी संभव हो, आप अधिगम-प्रक्रिया को उनके लिए प्रासंगिक परिवेश से संबंधित करें और उनके अपने अनुभवों से उदाहरण लें।
- **भाषा का उपयोग:** जिस भाषा का आप उपयोग करते हैं उसके बारे में सावधानी से सोचें। सकारात्मक भाषा और प्रशंसा का उपयोग करें, और विद्यार्थियों का तिरस्कार न करें। हमेशा उनके बर्ताव पर टिप्पणी करें और उन पर नहीं। 'आप आज मुझे कष्ट दे रहे हैं' बहुत निजी लगता है और इसे इस तरह बेहतर ढंग से व्यक्त किया जा सकता है, 'मैं आज आपके बर्ताव को कष्ट पा रहा हूँ। क्या आपको किसी कारण से ध्यान देने में कठिनाई हो रही है?' जो काफी अधिक मददगार है।
- **घिसी-पिटी बातों को चुनौती दें:** ऐसे संसाधनों की खोज और उपयोग करें जो लड़कियों को गैर-रूढ़िवादी भूमिकाओं में दर्शाते हैं या अनुकरणीय हों, महिलाओं, जैसे वैज्ञानिकों को स्कूल में आमंत्रित करें। अपनी स्वयं की लैंगिक रूढ़िवादिता के प्रति सजग रहें; हो सकता है आप जानते हैं कि लड़कियाँ खेल खेलती हैं और लड़के ख्याल रखते हैं, लेकिन हम अक्सर इसे भिन्न तरीके से व्यक्त करते हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि हम समाज में इस तरह से बात करने के आदी होते हैं।
- **एक सुरक्षित, स्वागत करने वाले अधिगम/सीखने के वातावरण का सृजन करें:** यह जरूरी है कि सभी विद्यार्थी स्कूल में सुरक्षित और वाँछित महसूस करें। हर एक से परस्पर सम्मानपूर्ण और मित्रवत बर्ताव को प्रोत्साहित करके आप अपने विद्यार्थी को वाँछित महसूस कराने की स्थिति में होते हैं। इस बारे में सोचें कि स्कूल और कक्षा अलग अलग विद्यार्थियों को कैसी दिखाई देगी और महसूस होगी। इस विषय में सोचें कि उनसे कहाँ बैठने को कहा जाएगा और सुनिश्चित करें कि दृष्टि या श्रवण संबंधी दुर्बलताओं या शारीरिक विकलांगताओं वाले विद्यार्थी ऐसी जगह बैठें जहाँ से पाठ उनके लिए सुलभ होता हो। निश्चित करें कि जो विद्यार्थी शर्मीले हैं या आसानी से विचलित हो जाते हैं वे ऐसे स्थान पर हों जहाँ आप उन्हें आसानी से शामिल कर सकते हैं।

विशिष्ट अध्यापन दृष्टिकोण (Approaches)

ऐसे कई विशिष्ट दृष्टिकोण हैं जो सभी विद्यार्थियों को शामिल करने में आपकी सहायता करेंगे। इनका अन्य प्रमुख संसाधनों में अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है, लेकिन एक संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है:

- **प्रश्न पूछना:** यदि आप विद्यार्थियों को अपने हाथ उठाने को आमंत्रित करते हैं, तो वे लोग ही उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं। अधिक विद्यार्थियों को उत्तरों के बारे में सोचने और प्रश्नों का जवाब देने में शामिल करने के अन्य तरीके हैं। आप प्रश्नों को विशिष्ट लोगों की ओर निर्देशित कर सकते हैं। कक्षा को बताएं कि आप तय करेंगे कि कौन उत्तर देगा, फिर सामने बैठे लोगों की बजाय कमरे के पीछे और पार्श्वों में बैठे लोगों से पूछें। विद्यार्थियों को 'सोचने का समय' दें और विशिष्ट लोगों से योगदान आमंत्रित करें। आत्मविश्वास का निर्माण करने के लिए जोड़ी या समूहकार्य का उपयोग करें ताकि आप समग्र-कक्षा चर्चाओं में हर एक को शामिल कर सकें।
- **आकलन:** रचनात्मक आकलन के लिए ऐसी तकनीकों की शृंखला का विकास करें जो हर विद्यार्थी को अच्छी तरह से जानने में आपकी मदद कर छिपी हुई प्रतिभाओं और कमियों को उजागर करने के लिए आपको सृजनशील होना पड़ेगा। रचनात्मक आकलन उन अनुमानों, जिन्हें कतिपय विद्यार्थियों और उनकी योग्यताओं के बारे में सामान्यीकृत दृष्टिकोणों से आसानी से बनाया जा सकता है, के बजाय सटीक जानकारी देगा। तब आप उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के प्रति अनुक्रिया करने के लिए अच्छी स्थिति में होंगे।

- समूहकार्य और जोड़ी में कार्य: सभी को शामिल करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सावधानी से अपनी कक्षा को समूहों में बाँटने या जोड़ियों बनाने के तरीकों के बारे में सोचें और विद्यार्थियों को एक दूसरे को महत्व देने के लिए प्रोत्साहित करें। सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थियों को एक दूसरे से सीखने और वे जो जानते हैं उसमें आत्मविश्वास का निर्माण करने का अवसर मिले। कुछ विद्यार्थियों में छोटे समूह में अपने विचारों को व्यक्त करने और प्रश्न पूछने का आत्मविश्वास होता है, लेकिन संपूर्ण कक्षा के सम्मुख नहीं।
- विभेदीकरण: अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग कार्य तय करने से विद्यार्थियों को जहाँ वे हैं वहाँ से शुरू करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। खुले-सिरे वाले कामों को तय करने से सभी विद्यार्थियों को सफल होने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों को कार्य का विकल्प प्रदान करने से उन्हें अपने काम के स्वामित्व को महसूस करने और अपनी स्वयं की अधिगम-प्रक्रिया के लिए दायित्व लेने में सहायता मिलेगी। व्यक्तिगत अधिगम आवश्यकताओं को ध्यान में रखना, विशेष रूप से बड़ी कक्षा में, कठिन होता है, लेकिन विविध प्रकार के कामों और गतिविधियों का उपयोग करके ऐसा किया जा सकता है।

संसाधन 2: विविधता पर चिंतन करना

तालिका R2.1 विविधता पर चिंतन करना – खाली टेम्प्लेट (देखें गतिविधि 4)।

E	कार्यवाहियाँ, हस्तक्षेप या वह स्टाफ जिसके साथ सहयोग किया जाना है										
D	विद्यालय और घर पर सीखने में प्रतिशत पहुँच, स्वीकृति, प्रतिभागिता और उपलब्धि का अनुमान										
C	विद्यार्थियों का प्रतिशत										
B	विविधता का प्रकार										
A	#										

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Ainscow, M., Booth, T. and Dyson, A. (2006) *Improving Schools Developing Inclusion*. Abingdon: Routledge.

Artiles, A., Kozleski, E., Dorn, S. and Christensen, C. (2006). 'Learning in inclusive education research: remediating theory and methods with a transformative agenda', *Review of Research in Education*, no. 30, pp. 65–108.

Causton-Theoharis, J. (2009) 'The golden rule of providing support in inclusive classrooms: support others as you would wish to be supported', *Teaching Exceptional Children*, vol. 42, no. 2, pp. 36–43.

De Silva, N.L. (2013) 'Inclusive pedagogy in light of social justice. special educational rights and inclusive classrooms: on whose terms? A field study in Stockholm suburbs', *European Journal of Education*, no. 48, pp. 419–35.

Drummond, M.J. and Hart, S. (2013) 'An alternative approach to school development: the children are the evidence', *Forum*, no. 55, pp. 121–32.

Florian, L. (2013) 'Preparing teachers to work with everybody: a curricular approach to the reform of teacher education', *Forum*, no. 55, pp. 95–101.

Gutierrez, K. and Correa-Chavez, M. (2006) 'What to do about culture?' *Lifelong Learning in Europe*, vol. 11, no. 3, pp. 152–9.

Kholofelo, C.M. and Frempong, G. (2014) 'The lived experiences of orphaned learners in South Africa: implications for the provision of quality education', *International Journal of Inclusive Education*, vol. 18, no. 7, pp. 686–97.

Liasidou, A. (2013) 'Bilingual and special educational needs in inclusive classrooms: some critical and pedagogic considerations', *Support for Learning*, vol. 28, no. 1, pp. 11–16.

Miles, S. and Singal, N. (2010) 'The education for all and inclusive education debate: conflict, contradictions or opportunities', *International Journal of Inclusive Education*, vol. 14, no. 1, pp. 1–15.

Tetler, S. and Baltzer, K. (2011) 'The climate of inclusive classrooms: the pupil perspective', *London Review of Education*, vol. 9, no. 3, pp. 333–44.

United Nations (1989) *The United Nations Convention on the Rights of the Child*. Available from: http://www.unicef.org.uk/Documents/Publication-pdfs/UNCRC_PRESS200910web.pdf (accessed 16 October 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (<http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/>)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: © द ओपन यूनिवर्सिटी (Figure 1: © The Open University)

चित्र 2: कार्टून, © अज्ञात। (Figure 2: cartoon, © unknown.)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।